श्रीगणेशायनमः।

# ग़ज़ल संग्रह

## प्रथम-भाग

### ग़ज़ल ॥१॥

स्तुति श्रवण मित्रो जो रामेश्वर का गाता है।
विमान उसके लिये सज अंत में सुरपुर से आता है॥
मित्र वैकुंठ से भी बढ़के है उस मन्द्र की शोभा।
मन्द्र में घुसते ही हो नाश सब पापों का जाता है॥
मूर्ति हैगी रामेश्वर के पीछे ही वो गणपति की।
दर्श पहिले जो जाता है वह उनका ही तो पाता है॥
सतीजी भी हैं रामेश्वर के बायें अंग में बैठीं।
तिलक माथेपै हीरेका अधिक ही जगमगाता है॥
अधिक उस मन्द्र में चौबीस तीरथ और भी हैंगे।
जिधर देखो उधर वैकुंठ ही नज़रों में आता है॥
सिन्धु शोभायमान उस मन्द्र के चारों तरफ़ ही है।

यात्रियों को वो आनन्द से लहरें दिखाता है ॥
'गिरंदा' बाँधकर जो पुल चढ़े थे राम लङ्का को ।
नज़र वह पुल वहां से गर कोई देखे तो आता है ॥

गज़ल ॥ २ ॥

हर भजन का उस घड़ी आनन्द तुझको आयगा ।
जिस घड़ी तलसे तेरे यह बोलता रह जायगा ॥
अन्त में तेरे लिये सुरपुर से आयेगा विमान ।
हरभजन की मारफ़त चढ़ कर तू उसपर जायगा ॥
धर्म से बढ़ कर पदारथ है नहीं संसार में ।
धर्म क़ायम जिसका है वह दर्श ईश्वर पायगा ॥
धर्म कारण जा के घर चांडाल के हरचंद बिके ।
छोड़ धन सम्पतको ऐसा क्या कोई कर जायगा ॥
बेंच घर वेश्या के स्त्री और सुत वक्काल घर ।
ऐसा भी यश तज पुत्र स्त्री क्या कोई कर जायगा ॥
धर्म कारण यश लिया जग में तो बस हरिचन्द ने ।
येही संग लेजाय लाया है न कुछ लेजायगा ॥
वह भी दिन अब अय 'गिरंदा' आलगा है अनक़रीब ।
हो हफ़र तेरा ज़माना देखता रह जायगा ॥

गज़ल ॥ ३ ॥

ना तो कुछ खाया खिलाया पुण्य ना कुछ करगया ।
क्या किया उसने जो मूरख जोड़कर धन धरगया ॥
न नपर उसके लुटाया जिसने धन और धाम को ।

नाम इस संसार सागर में वो अपना करगया ।।
मार दारा तख्तशाही क्या सिकन्दर लेगया ।
लेके बदनामी ही सर पर वोभी एक दिन मरगया ॥
मोह तज माया का रक्खा जिसने अपने धर्म को ।
मुँह उजाला उसका दुनिया में हुआ वो तरगया ॥
वक्त आखिर है 'गिरंदा' याद ईश्वर अब तो कर ।
कस केमर तैयार हो प्याला तेरा अब भरगया ॥

गज़ल ॥ ४ ॥

मुझसा तो पापी कोई मेरी नजर आता नहीं ।
तुझसा भी इस सरजमीं पर है कोई दाता नहीं ॥
मुझसा पापी तुझसा दाता है तो फिर क्या देर है ।
क्या मुझे भवपार अब तुझसे करा जाता नहीं ॥
तेरी प्रभुता पर ही बैठा हूँ कमर को मैं कसे ।
दरबदर मैं क्या करूँ मुझ से फिरा जाता नहीं ॥
कर दया मुझपर जो बेड़ा पार हो भव से मेरा ।
बिन दया इस पार से उस पार ये जाता नहीं ॥
चित्त पापों से हटादो नाथ मुझ आधीन का ।
कर दया ये दीन इस ने तो भी ये जाता नहीं ॥
वक्त आखिर है 'गिरंदा' कर फ़िकर कुछ अन्त की ।
काल जब आया तो फिर वो लौट कर जाता नहीं ॥

गजल ॥ ५ ॥

ध्यान ईश्वर से जब तक लगाना चाहिये ।

अपना आपा नामपर उसके मिटाना चाहिये ॥
फूला फूला ज़िन्दगी पर मत फिरै अय बावरे ।
है ये जब तककी जभी तक सर झुकाना चाहिये ॥
धन न जोबन काम आयेगा न आये तख्तोताज।
चन्दरोज़ का है ये इसपर ध्यान धरना चाहिये ॥
कां गये बलवान बाली और वो रावण सूरमा ।
कुछ किसी का भी निशां है गौर करना चाहिये ॥
कां है हिरनाकुश वो इकछत्र राजथा जिसका भला।
इसक़दर भी सर न दुनिया में उठाना चाहिये ॥
है जो कुछ आनन्द वो बस इसमें ही कुछहै 'गिरंद'।
राम अर्पण ही ये जानो तन लगाना चाहिये ॥

गज़ल ॥६॥

तू बड़ा हाकिम है एक सच्चा तेरा दरबार है ।
कैसाही पापी हो बंदा उसका करता पार है ॥
लूला लंगड़ा बावला अंधा या बहरा हो कोई ।
तेरी प्रभुता जिसपै है उस परही बेशुमार है ॥
जिसने तेरी राहमें जान और तन अर्पण किया ।
तूने उसको करदिया बैकुण्ठ का सरदार है ॥
राह में तेरी खिला भूखेको कुछ जिसने दिया ।
तूने उसका भर दिया करके दया घरबार है ॥
बनके नरसिंह खम्भ फाड़ा देखिये प्रहलाद हित ।
भक्त को अपने उबारा दुष्ट डाला मार है ॥

साग खाकर विदुरके घर पार उसको भी किया।
भक्तपर अपने तू ऐसा नाथ आशिक़ज़ार है॥
कर 'गिरंदा' दास पर अपनी दया हे नाथ अब।
दे दरश उसको उसे दर्शन तेरा दरकार है॥

गजल ॥ ७ ॥

मान भक्तों का बढ़ाया मेरा जी जानता है।
नखपै गिरवर को उठाय मेरा जी जानता है॥
टेर सुनते ही न फिर देर जरा आपने की।
ग्राहसे गजको बचाया मेरा जी जानता है॥
मान दुश्शासन दुर्योधन का घटाने के लिये।
चीर द्रौपदि का बढ़ाया मेरा जी जानता है॥
मीराबाई को भी और नार अहल्या को भी।
दर्श दे पार लगाया मेरा जी जानता है॥
दयानिधि आपने एकसिन्धु की रक्षा कारण।
शंखासुर मार गिराया मेरा जी जानता है॥
राज लंकाका विभीषण ही को देने के लिये।
खोज रावण का मिटाया मेरा जी जानता है॥
अब 'गिरंदा' पै भी हे दीनबन्धु दीनानाथ।
तेरी प्रभुता का है साया मेरा जी जानता है॥

गजल ॥ ८ ॥

जिस घड़ी क़ालिबसे तेरा दम रवाना होयगा।
उस घड़ी ना आशना सारा ज़माना होयगा॥

छूट जायेगा तेरा तुझसे कुटुम्ब परवार सब ।
जायगा छिट तेरा निशां सब कारखाना होयगा ॥
जिसका बंदा है मत भूल उसके एकपल नामको।
नाम को भूला तो यमका दण्ड पाना होयगा॥
जीते जीके सब हैं बस कोई मरे का है नहीं।
दम निकलतेही जो था अपना बिगाना होयगा॥
ऐ 'गिन्दा' किसफिकर बैठा है तू किस सोचमें ।
याद ईश्वर बिन किये सुरपुर न जाना होयगा ॥

गजल ॥ ९ ॥

जिस घड़ी दुनियासे बन्दे का सफर होनेलगा।
उस घड़ी परवार और सारा कुटुम रोने लगा॥
पीटता था सर कोई रोता था कोई गमज़दा ।
कोई अपने सुखके कारने जानको खोने लगा ॥
एकदिन मसनद व तंकियों पर पड़ा सोताथाजो
एकदिन वोही बिछौने खाकपर सोने लगा ॥
वालचोंका उसका हो इस लोक ना उस लोक में।
धर्म की खेती लगाकर प्रेम जो बोने लगा ॥
क्या सिवा हिर्सो हविस लायाहै क्या लेजायगा।
ऐ 'गिन्दा' बावला क्यूँ खामखा होने लगा ॥

गजल ॥ १० ॥

बंशी होठोंपे अधर धरके बजाने वाले ।
गोपी ग्वालों के तुम्हीं तो हो रिझानेवाले ॥

राज मथुराका लिया कंस तुम्हीं ने मारा।
नखपै गिरवर भी तुम्हींतो हो उठाने वाले॥
हिरनाकुशका भी उदर नाथ तुम्हींने फाड़ा।
भक्त प्रह्लादके हो तुमही बचानेवाले॥
दुष्ट का मान सभा बीच घटाया तुमने।
चीर द्रौपदका तुम्हीं तो हो बढ़ाने वाले॥
मीराँबाईको भी और नार अहल्या को भी।
नाथ भवपार तुम्हीं तो हो लगाने वाले॥
धनुषको शिवके जनकपुर में तुम्हीं ने तोड़ा।
मान दुष्टों का तुम्हीं तो हो घटाने वाले॥
अब 'गिरंदा'की भी हे दीनबन्धु दीनानाथ।
नैया भवपार तुम्हीं तो हो लगाने वाले॥

गजल ॥११॥

कैलास के निवासी हम हैं शरण तिहारी।
होकर दयाल हमपर सुध लीजिये हमारी॥
ये तीनलोक तुमने चौदह भुवन बसाकर।
अपनी कुटी बनाई कैलास त्रिपुरारी॥
गंगा जटा मुकुट में करती है वास निशदिन।
माथेपै चन्द्रमाकी क्याही कला है न्यारी॥
तनसे तुम्हारे सारे लिपटे हैं सर्प कारे।
गलबीच मुण्डमाला और बैलकी सवारी॥

हे शृंगीनादवाले लम्बी जटाओं वाले।
सुध लीजिये हमारी हे नीलकण्ठ धारी ॥
लेते हैं नेत्र तीनों सुध तीनों लोक की ये।
हे तीन नेत्रवाले बलिहार त्रिपुरारी ॥
है दास 'गिरंद' की अब अरदास येही तुमसे।
अपनेंही दरका कीजो शिवजी मुझे भिकारी ॥

गजल ॥१२॥

क्याही इस संसार सागर का गरम बाज़ार है।
जिसका सौदा होगया वो होगया तैयार है ॥
हिरनाकुश हिरनाक्ष क्यासूर क्या २ बलवान थे।
काल ने सबका सफाया करदिया एक बार है ॥
बाली और रावण महारावण से थे जो सूरमा।
काँ गये काँ हैं कोई बाकी भी अब सरदार है ॥
शंखासुर सा दैत्य जिसने सिन्धु मथ डाला तमाम।
खागया उसको भी उसका काल आखिरकार है ॥
बल व विक्रम से हरिश्चन्द्र से हुये धर्मात्मा।
है किसी का भी निशां जाने ये क्या इसरारहै ॥
चोर और रहजन जुआरी हैं चुगल या बद जो हैं।
इन सभोंको जानिये शैतान की फिटकार है ॥
ऐ 'गिरंद' जिसका उस परमात्मा में ध्यान है।
प्राण छुटतेहि उसका भवसागर से बेड़ा पार है ॥

गजल ॥१३॥

क्या था क्या ये होगया देखो ज़रासी बार में।

मर गये वो भी तो जिनके काल था इख्तयार में ॥
बल व विक्रम से हुए धर्मात्मा हरिचन्द से ।
अब किसी का भी निशां बाक़ी है इस संसार में ॥
सर्व सोनेकी थी लंका जिनकी उनका तो सुनो ।
रत्तिभर सोना मिला उनको न मरती बार में ॥
कर्म जो जैसा करे पायेगा वो वैसाही फल ।
क्याही सच्चा देखिये इन्साफ़ है सरकार में ॥
अन्तमें भी जाय गर मुँहसे निकल ईश्वर का नाम।
ऐ 'गिरंदा' तब तो पुरसिश हो तेरी दरबार में ॥

गज़ल ॥१४॥

ज़िंदगी को एक पानी का बबूला जान तू ।
मत करे मूरख अरे इसपर गुमाना मान तू ॥
महल थे कंचनके जिनके अबभीहै कुछ उनके घर ।
होगया खाना विराना देखले धर ध्यान तू ॥
राज धन और पुत्र स्त्री काम आयेंगे नहीं ।
काम आयेगा वही ईश्वर उसे पहचान तू ॥
है हरएक धनवान का साथी न निर्धन का कोई ।
देख आँखें खोलकर बनता है क्यूं नादान तू ॥
बजरहा है कालका शिरपर नक़ारा हरघड़ी ।
ऐ 'गिरंदा' अन्तका भी करले कुछ सामान तू ॥

गजल ॥ १५ ॥

मान संसार व सागर का बढ़ाने वाले ।

दो दरश मुझको मेरी धीर बधाँने वाले ॥
दूरही दूर मूर एक करता है मुझ पापी को ।
तुम्ही हिरदेसे हो हे नाथ लगाने वाले ॥
जिसकी बिगड़ी उसीकी नाथ बनाई तुमने ।
मेरी बिगड़ी भी तुम्हीं तो हो बनाने वाले ॥
अन्त में आनकर पकड़ें जो यमदूत मुझे ।
नाथ उनसे भी तुम्हीं तो हो बचाने वाले ॥
बिगड़ी बनतेही बनते जाय बन तेरी भी 'गिरंद्'।
लौ लगा हरसे वोही हर हैं बनाने वाले ॥

गजल ॥ १६ ॥

बेखबर सोता है सुख की नींद में तू क्या पड़ा ।
आगया पैगाम हलकारा अजलका है खड़ा ॥
जो रहा उस नामसे महरूम सुन ऐ नेकनाम ।
है हुकम सरकारसे उसको बहुत कुछही कड़ा ॥
एक सिवा ईश्वर कुटम साथी हो ना परवार हो ।
है भरोसा सबको इस संसार में उसका बड़ा ॥
जिंदगी के है बराबर मौत भी सच जान तू ।
काल जिस पर हर घड़ी हर वक्त रहता है अड़ा ॥
ए 'गिरंदा' मिलती है वैकुंठ की पदवी उसे ।
चित्त जिसका या दया या धर्मसे कुछहै लड़ा ॥

गज़ल ॥ १७ ॥

तीनलोक और चौदह भुवनकी सुधकेलिवैयातुम्हींतोहो।

तुमबिन किसका ध्यान धरूँ घटघटके बसैया तुम्हींतो हो ॥
अजर अमर है नाम तुम्हारा मोक्ष करैया तुम्हींतो हो॥
तुमही विष्णु भगवान अधर वंसीके बजैया तुम्हींतो हो॥
पूरण परमानन्द नन्द बाबाके कन्हैया तुम्हीं तो हो।
गोपीग्वालोंको हे दयानिधि छाछ चुरैया तुम्हींतो हो।
संकटमोचन नाम तुम्हारा कष्टहरैया तुम्हीं तो हो।
बामन बन बलछला तुम्हींने बलकेछलैया तुम्हींतो हो॥
कहै 'गिरंदा' नाथ मेरी बिगड़ी के बनैया तुम्हींतो हो।
भवसागरकी नदीसे नैया पार लगैया तुम्हींतो हो॥

गजल॥ १८॥

पुत्र स्त्री धन न सम्पत संग तेरे जायगा।
छूटते ही प्राण तनसे तन भी यह छुटजायगा॥
छोड़ माया मोहको एक धूलका फंदा है ये।
हर भजनकर हरभजन ही काम तेरे आयगा॥
है सिवा उसके किसीका कौन इस संसार में।
पार आखिर वक्त में वोही करे तो जायगा॥
चन्द दिनके वास्ते रखता है क्यूँ धन जोड़कर।
ये तो सब क़ायम रहे तू खाक में मिल जायगा॥
ऐ 'गिरंदा' बेधड़क हो लौ लगा उस नाम से।
अन्त में वैकुण्ठ पदवी को तो तू पाजायगा॥

ग़ज़ल॥ १९॥

जिसे चाहें उसे एक पलमें बढ़ा देते हैं।

जिसे चाहें उसे एक पल में घटा देते हैं ॥
करें पर्बत को राई राई को करदें पर्वत ।
ये करश्मे भी वह एकपल में दिखा देते हैं ॥
तख्त और ताज वो बख्शें जिसे चाहें उसको।
गदा दर दर का जिसे चाहें बना देते हैं ॥
मार भी डालें वो एकपल में जिसे चाहें उसे।
एकपल में वो जिसे चाहें जिला देते हैं ॥
किश्तीको मुझसे ही पापीकी 'गिरंद' दीनानाथ ।
एक लहज़े वो भवपार लगा देते हैं ॥

गजल ॥ २० ॥

विपत में प्रहलाद ने जिसदम पुकारा रामको।
टेर सुन वह दौड़ते आये हैं उसके धामको ॥
भक्त पर अपने वो हैं रिछपाल ऐसे विश्वनाथ ।
सुनते हैं उसकी वो त्यागने विश्वकेकर कामको ॥
टेर सुन नरसी की जंगल में दिया दर्शन उसे।
काज जो भी थे बनाये लेत ही बस नामको ॥
मर्द दाना है अकिलवर है वोही होशियार ।
नामको रटता है उस के जो सुबह या शामको ॥
पाता है सुरपुर की पदवी जगत् में वोही 'गिरंद'।
हरभजन करता है जो तज ऐश और आरामको ॥

गज़ल ॥२१॥

अब हमारी गर्दिशे किस्मत सताती है हमें ।

करके हमसे वैर क्या क्या दुख दिखाती है हमें ॥
कर दया परमात्मा अब कर दया आधीन पर ।
पार भव तेरी दया ये अब लगाती है हमें ॥
होगये नाआशना अपने बिगाने हमसे सब ।
अब कहें दुख किससे कहते शर्म आती है हमें ॥
मुफ़लिसी ऐसी बुरी होती है ये देखो 'गिरंद' ।
चुप हैं हम और खल्क़ दीवाना बताती हमें ॥

गजल ॥२२॥

ध्यान परमात्मामें अपना निशदिन जो लगाते हैं ।
दरश फिर अन्तमें उसका नहीं वो मित्र पाते हैं ॥
रामके नामसे नित ध्यान है जिनका लगा देखो ।
विमान उनके लिये सज अंतमें सुरपुर से आते हैं ॥
पदारथ राम सुमरनके सिवा नाहिं है कोई जग में ।
रामसे प्रेम है जिनका वोही भवपार जाते हैं ॥
धनी भी वोही करते हैं वही निर्धन भी करते हैं ।
है जैसा कर्म जिनका फल वो जन वैसाही पाते हैं ॥
अमर भी है तो है वोही अजर भी है तो है वोही ।
उसीका जीव चौरासी ध्यान जगमें लगाते हैं ॥
गफ़लती गफ़लतमें धोखा खायगा एक रोज तू ।
नहो गाफ़िल अरे गफ़लत में दिन बेकार जाते हैं ॥
बुरा उनका भी हो संसार में जो लोग हैं ऐसे ।
'गिरंदा' अपने स्वारथ को बुरा दुसरेका चाहते हैं ॥

गज़ल ॥२३॥

तनसे निकले जान निकले मुँहसे उस ईश्वरका नाम ।
रूह खुश जब हो मेरी पूरन मेरा जब होय काम ॥
है यही इच्छा हे दीनानाथ मुझ आधीनकी ।
पाऊँ शरु पदवी तो बस पाऊँ तुम्हारे धामकी ॥
मैं बड़ा पापी हूँ निष्ठी ख्वार हो मेरी बहुत ।
तू न सुध लेगा तो लेगा कौन मुझ नाकाम की ॥
नाले क्या उसदम हो जिसदम तनसे निकले जानये ।
हो विमुख तुझ से उमर भर खोईहै आरामकी ॥
ऐ 'गिंदा' सुख तो वो पाता है इस संसार में ।
जो सुमरनी फेरता निशादिन है सीताराम की ॥

गज़ल ॥ २४ ॥

जो नहीं हरनाम लेता है बहुत पछतायगा ।
अंतमें यमदूत पकड़ेंगे तो होश उड़जायगा ॥
उस घड़ी माता पिता साथी न स्त्री पुत्र हो ।
जिस घड़ीयेप्राणरुखसत होके तन से जायगा ॥
जिसका उस परमात्मा के नाम से ही ध्यान है ।
पार भव से प्राण छुटतेही वो जन होजायगा ॥
है पदारथ हर के सुमरनसे न बढ़कर अन्तमें ।
जो रटेगा इसको सुरपुर की वो पदवी पायगा ॥
कर 'गिंदा' जानोतन उसनामपरअपनायेवार ।
नाम तेरा लोक तीनोंमें अमर होजायगा ॥

गजल ॥२५॥

मरते दम जिनकी जुबां पर नाम ईश्वर आगया।
बेधड़क हो वोही जन वैकुंठ को सीधा गया॥
छोड़ मायाजाल जिसने नाम परमेश्वर रटा।
छूटा आवागमन उसका ये वो पदवी पागया॥
जो विमुख उस नामसे होगा सुनो उसका भी हाल।
बाँधकर यमदूत उसको नर्क में लेजायगा॥
जो गया दुनियाँ से फिर उसका पता पाया नहीं।
खागई धरती या अम्बर टूट उसको खागया॥
जिसका मोहनलाल कुछ भी ना दयाल ध्यान है।
पाके पदवी स्वर्गकी वो होके बेपरवा गया॥

गजल ॥२६॥

राह ईश्वर में धनको जो बशर अपने लुटाते हैं।
तो कुछ आनन्द इस संसार का वोही उठाते हैं॥
बड़ी पदवी उन्हें मिलती है इस संसार सागर में।
कि जो हस्तीको अपनी राह ईश्वर में मिटाते हैं॥
नजर हरसू जहूर उसका हरएक जर्रे में आता है।
हरएक जन जो कि जिसको तीरथों में ढूँढ आते हैं॥
जो जन भक्तीमें उसकी जानो तन अपना लगाये हैं।
जहाँ चाहें दरश फिर वो वहीं बस उसका पाते हैं
'गिरंदा' तीनों पन ग़फ़लतही गफलत में गये तेरे।
रहे हैं दिन जो बाक़ी ये भी अब बेकार जाते हैं॥

गज़ल ॥ २७ ॥

कर्म जिन जैसा किया वैसाही वह फल पायगा।
झूँठ का झूँठा ही बदला सचका सच्चा पायगा॥
बो बबूलों के विरछ वो आम खाना चाहे तो।
आम कैसे उसको मिल जायेँ वो कैसे खायगा॥
है मुकद्दर का लिखा बस जिस किसीके जोभी कुछ।
कम न ज़र्रा भर न ज्यादा उससे कोई पायगा॥
जोड़कर रक्खा है धन जिस सेठ या धनवान ने।
वहभी बस एकदम निकलते हाथ ख़ाली जायगा॥
ऐ 'गिरंदा, ख़र्चसे ज्यादा न रख धन पास तू।
जिसने खानेको दिया वोंही कफ़न सिजवायगा॥

गज़ल ॥ २८ ॥

लेके हरकारा जो जिसदम आया पैग़ामे अजल।
बस दफ़ातन जान फ़ौरन होगई उसदम निकल॥
बल व विक्रम मोरध्वज से होगये धरमात्मा।
कोई भी क़ायम है इस संसार में अब आज कल॥
होगये नापैद वोभी मिट गया उनका निशाँ।
आँख मिलते ही ग़ैरसे भी जिनमें आजाता था बल॥
होगये नौशेरवाँ रुस्तम व हातिम से सख़ी।
कालने फ़ौरन ही इन सबको किया देखो कतल॥
काल तेरे भी 'गिरंदा' लग रहा है अनक़रीब।
डाले वह तुझको भी च्यूँटो की तरह एकरोज़ मल॥

लादकर टाँडा ये बनजारा जो जिसदम जायगा।
ठाटही उसदम पड़ा उसका फकत रहजायगा ॥
राजो धन महलो दुमहले भी रहें कायम ये सब।
एक फ़क़त उसका ही बस नामो निशाँ मिट जायगा॥
मत भरोसा ज़िंदगी का कर फ़िकर कर अन्तकी।
अन्त की करली फ़िकर तो-काम सब बन जायगा ॥
मोह तज तू पुत्र स्त्री और कुटुम परिवार का।
तेरे पीछे क्या कोई अपना गला कटवायगा ॥
कर भजन उसका कि है जिसका सभीये जानोतन।
तो तेरा ये अन्त मे भवपार बेड़ा जायगा ॥
है वो मालिक लोक तीनों का उसे इख़्त्यारहै।
पर लिखा तक़दीर का जो कुछ है सोई पायगा॥
ऐ 'गिरद्दा' ध्यान ईश्वर ही में जो जायेगा मर।
अन्त में बैकुंठ को हो बेधड़क वो जायगा ॥

गजल ॥२०॥

हे विष्णु हे विश्वम्भर हे नीलकंठधारी।
हे पारब्रह्म ईश्वर हे राम हे मुरारी ॥
बलि पर जो की दया तो ऐसी दयाकी तुमने।
भक्त हेत द्वार उसके बनकर गये भिखारी ॥
प्रहलाद भक्त कारण बन सिंह खम्भ फाड़ा।
खम्भ फाड़ हिरनाकुशका डाला उदर विदारी ॥

रावण सा सूरमा वो लंका का था जो हाकिम ।
दशशीश भुजाबीसों उसकी भी काट डारी ॥
शंखासुर दैत्य जिसने जो सिंधु सब मथा है ।
उसको भी मार रक्षा हुई सिन्धु पर तुम्हारी ॥
हर गुलमें हर शजर में तूही तू रमरहा है ।
फिर क्यूं न हो 'गिरदा' तन मनसे तुझपै वारी ॥

गजल ३१॥

सुध अन्तमें सदा शिव लोगे तुम्हीं हमारी ।
तुम बिन न कोई मेरा मैं हूँ शरण तुम्हारी ॥
संसार में न साथी तुम बिन है कोई मेरा ।
तुमही करो तो नैया भवपार हो हमारी ॥
जो भी थे मित्र सारे दुश्मन हुये हमारे ।
सुधलो विपतका मारा फिरता हूं मैं दुखारी ॥
जाता हूं पास जिसके लेता है फेर मुँह वो ।
शिव एक सिवा तुम्हारे दुश्मन है खल्क सारी ॥
दरबार में खड़ा हू चरणों में आपड़ा हूं ।
पति राखिये हमारी हे नीलकंठधारी ॥
वर तुम समान जग में है कौन देने वाला ।
हे तीन नेत्र वाले सुध लीजिये पुरारी ॥
करजोर 'शिवचरन' ये कहता है हे सदाशिव ।
आशा है येही मेरी दर्शन हो एकबारी ॥

गज़ल ॥ ३२ ॥

सैकड़ों मरगये मूरख अरे तू भी युहीं मरजायगा ।

वह रहे क़ायम कि जो कुछ धर्म तू कर जायगा ॥
जोड़ा है ये धन जो तूने कर खरच उस नामपर ।
मरगया तू तो ये किस के वास्ते धर जायगा ॥
कैसे २ भूप दुनिया में हुये और मरगये ।
तूभी ऐसेही समझ एक रोज़ बस मर जायगा ॥
बेखबर मत हो मत उसके भूल एक पल नामको ।
है यही अक्सीर हक़ में तेरे तू तर जायगा ॥
ऐ 'गिरंदा' ज़िंदगी का है भरोसा कुछ नहीं ।
कर भजन उसका उसीके नाम से तर जायगा ॥

गजल ॥ १३ ॥

कूचका बजते ही डंका आया पैयामे अजल ।
रूह कालिब से गई एक साथही फ़ौरन निकल॥
रहगया कालिब ही रखवाला ही क़ालिबका नहीं ।
फिर तो उस कालिबको जी चाहे जहां दे कोई डाल॥
चारदिन कोई भी रोले पीटले अपना या गैर ।
पांचवें दिन ऐशो अशरत से लगे उड़ने को माल॥
उसका ही बाकी निशां रहता नहीं रहता है सब ।
इसपै भी बन्दा ये देखो बेखबर है बेखयाल ॥
ऐ 'गिरंदा' मतहो गाफ़िल मतहो इतना बेखयाल ।
सौ बरस ज़िन्दा रहा है तो भी आखिरकार काल ॥

गजल ॥ १४ ॥

जो गया दुनिया से फिर वह लौटकर आया नहीं ।

भेद ईश्वर का किसी ने आजतक पाया नहीं ॥
ज्योतिषी पण्डित व रम्मालों से भी पूछा ये हाल।
हाल असली कुछ किसी ने इसका बतलाया नहीं॥
जिसकी जितनी पहुँच थी उतनी वो अपनी कहगया।
अन्त तेरा विष्णु ब्रह्मा शिव ने भी पाया नहीं ॥
लेके माला सिद्ध बन बैठा कि जो उस नाम पर ।
तेरी प्रभुता का पता हाथ उसके भी आया नहीं ॥
ऐ 'गिरंध' जिसमें देखा उस में है व्यापक तुही ।
इससे ज्यादा और कुछ तेरा निशां पाया नहीं ॥

गज़ल ॥२७॥ कृष्णजन्म ।

कृष्णजन्म सुन धूम बेसुध होगई संसार में ।
मथुरा वृन्दावन व गोकुल कूचओ बाज़ार में॥
रोहिणी नक्षत्र था बुधवार भादों अष्टमी ।
जन्मे दीनानाथ अंधाधुंध उस अँधियार में ॥
लेके मथुरासे चले जब कृष्णको वसुदेवजी ।
थे सभी ग़ाफ़िल सिपाही कंसके दरबार में ॥
शेष छाया कृष्ण पर करते हुये जाते थे साथ ।
लोक तीनोंमें उजाला होगया उस बार में ॥
नन्हीं २ बूँदें गरजे है वो बादल बेशुमार ।
जाऊँ गोकुल इस दशामें किसतरह लाचार में॥
आये यमुनापै तो यमुनामें भी जलकी सुध नथी।
कैसे पहुँचूंगा भला इस पार से उस पार में॥

घुसते ही यमुना में यमुना भी चरण छू कृष्ण के।
हो गई थाईं तुरत ही आगई मंझार में ॥
पहुँचे यशुदाके भवन वसुदेव देखा जब 'गिरंद'।
सोते पाये अपने अपने सब वहां घरबार में ॥

गजल ॥२६॥ नारदजीकी कंस से।

धन्य तुझको कंस तेरा खुशनुमा दरबार है।
शक नहीं है तेरी हुशियारी में तू हुशियार है ॥
जान का भी है ख्याल आपकी तुझे कुछ या नहीं।
मारने वाला भी तेरा हो गया तैयार है ॥
भूल जावेगा ये हुशियारी अरे हुशियार हो।
काल तेरा तुझको करना चाहता बेजार है ॥
आ चुका है काल भी तेरा तेरे अब अनकरीब।
धोखे ही धोखे में डालेगा तुझे वो मार है ॥
बहुते ही नारद ने समझाया 'गिरंदा' कंसको।
कैसे वो माने कि जिसपर काल आशिकज़ार है ॥

गजल ॥२७॥

मुझसे ज्यादा सरज़मीं पर भी कोई सरदार है।
चाहे जिसको मार डालूँ मैं मुझे इख्त्यार है ॥
टुकड़े टुकड़े उसके करदूँगा मैं नारद उस घड़ी।
जिस घड़ी ये म्यान से बाहर हुई तलवार है ॥
करके रक्खा क़ैद बहनोई और अपनी बहन को।
जन्मे जो सन्तान वाजिब डालना ही मार है ॥

कंस भी दुशमन से अपने हरघड़ी हरदम 'गिरंद'।
रहता है गाफ़िल नहीं रहता बहुत हुशियार है ॥

गजल ॥ २८ ॥ नारदजीकी कंससे ।

सत्ययुगमें राजा हिरनाकुश सा था नहीं संसार में ।
राज इकछत उसका था थी मौतभी इख्त्यार में ॥
शेर बकरी इकटे जल पीते थे जिस के राज में ।
बनके नरसिंह उसको भी मारा जरासी वार में ॥
त्रेतामें रावण को मारा सूरमा से बन के राम ।
था बड़ा नामी वो उसकी जोर था तलवार में ॥
कृष्ण बनकर तुझको जिसदम मारडाले कंस वो ।
दबदबा उसका हो उसदम कूचओ बाजार में ॥
हैं बनी के सब नहीं बिगड़ी का है साथी कोई ।
कोई पूछे बात फिर घरमें न फिर दरबार में ॥
जान का अपनी तुझे कुछ ख्याल है तो कंस तू ।
रह बहुत हुशियार हरदम हरघड़ी हरबार में ॥
करके राजा कंसको हुशियार देखो ऐ 'गिरंद' ।
मारा उसने जिसके तीनों लोक हैं इख्त्यार में ॥

गज़ल ॥ २९ ॥

मारने को मेरे जो करके इरादा आयगा ।
हाथ से मेरे वही नारद जी मारा जायगा ॥
सूरमा बलवान आगे आ नहीं सकता मेरे ।
आयगा आगे वो मेरे काल जिसका आयगा ॥

छोड़ूंगा जिंदा नहीं नारदजी मैं भी तो उसे ।
क़त्ल पर मेरे कमरको कसके जो भी आयगा ॥
आयगा सन्मुख मेरे लड़ने को जो मुझ से कोई ।
देखकर मुझको वो मेरे खौफ़ से मरजायगा ॥
लोक तीनों काँपते हैं नामसे नारद मेरे ।
क्या मेरा जीते जी मेरे दबदबा उठजायगा ॥
म्यानसे बाहर हुई तलवार नारद जिस घड़ी ।
सरही सर संग्राम में उसदम पड़ा दिखलायगा ॥
कंस बैठा क्रोधमें कहता है नारद से 'गिरंद' ।
देखी जायेगी जभी जब वक्त जो वो आयगा ॥

गज़ल ॥४०॥ यशोदासे गोपियोंका उलहना ।

यशोदा कान्ह ने तेरे किया हमको दुखारी है ।
दही खा छीन मटकी इसने दे चौपट में मारी है ॥
खूब छलबल यशोदाजी इसे तुम ने सिखाये हैं ।
तुम्हीं ने खूब ये करना सिखाई राह भारी है ॥
कहें हम कंससे जाकर अगर यह हाल सब इसका ।
तो इसको कंस भी देगा बहुत कुछ दंड भारी है ॥
न समझाती हो तुम इसको न इसको डटती हो तुम ।
तुम्हारा ही इशारा और शरारत ये तुम्हारी है ॥
मस्त जोबनमें मदमाती बावरी तुम तो फिरती हो ।
गया घरसे निकल कर भी नहीं मेरा मुरारी है ॥

न आना द्वारपर मेरे कभी अब भूलकर भी तुम।
जो मैंने तुमने जवानी के लाज कुलकी बिसारी है॥
झाड़ झूठ 'गिरधर' ये लगाने वाले को मेरे।
द्वारपर मेरे लड़ने को हरएक आई ये नारी है॥

गज़ल॥४१॥ गोपियोंकी ऊधोसे।

बेक़रारी दिलकी ऊधो अब सही जाती नहीं।
है तरक्की हमपै दम घटती नजर आती नहीं॥
सुखके साथी गैर और अपने नजर आते हैं सब।
दुख बुरी शै है कि दुखका है कोई साथी नहीं॥
किससे दिलका हाल हम अपने कहैं सुनता है कौन।
दिलदुखोंके दिलकी हसरत बिन दरश जाती नहीं॥
एकदिन वह था कि हम और श्याम सब रहते थे साथ।
एक दिन अब है कि परछाँई नजर आती नहीं॥
क्या बुरी होती है इस दिलकी लगी देखो 'गिरधर'।
बेकली कोई घड़ी कैसी करै जाती नहीं॥

गजल॥४२॥ गोपियों की ऊधोसे।

बेकलीसे कल हमैं कोई घड़ी आती नहीं।
कर्म बैरीकी दशा जो है सो है जाती नहीं॥
रंजो गम जो कर्म में ऊधो हमारे है लिखा।
उसकी हालत क्या कहैं हमसे कही जाती नहीं॥
जैसे दिन कटता है वैसे काटते हैं क्या करें।
रात बैरन श्याम बिन काटी भी तो जाती नहीं॥

श्याम घर कुब्जा के जाकर भूल बैठे हैं हमें ।
हम तड़पते हैं हमें अब मौतभी आती नहीं ॥
दुखकी पुरशिस क्याभला ऊधो हमारी हो वहां ।
जबकि कुब्जा सौतरूखा हलपै वो खाती नहीं ॥
छाछ घर २ की चुराकर जोकि खाते थे हमेश ।
ख्वाब में अब उनकी परछांई नजर आती नहीं ॥
एक दिन का रंजोगम गर होय तो कुछ गम नहीं ।
तीस दिन की ये 'गिरंद' अब सही जाती नहीं ॥

गजल ॥४३॥ गोपियोंकी ।

गमकी दिलपर से दशा कोई घड़ी जाती नहीं ।
हैं परेशाँ हम हमें अब मौत भी आती नहीं ॥
पूँछा जोशी पंडितों से तो वो यूँ बोले कि हां ।
है दशा नाकिस तुम्हारी इन दिनों जाती नहीं ॥
कर्म ही दुश्मन हमारा हो तो हम किससे कहें ।
इसके आगे हमसे कोई बात बन आती नहीं ॥
किससे अपने गमकी हालत जाके हम ऊधो कहें ।
दिल दुखों की कुछ किसी के ख्याल में आती नहीं ॥
बेरहम ऐसे हैं ऊधो देखिये घनश्याम वो ।
दिल दुखाने की जो आदत उनकी है जाती नहीं ॥
चैन हमको श्यामबिन पड़ता नहीं देखो 'गिरंद' ।
खैंचकर दिलकी कशिश फिर क्यूँ उन्हें लाती नहीं ॥

गज़ल॥४४॥गोपियोंकी ।

दिलकी बेचैनी से ऊधो अब तो चैन आता नहीं।
इस दशामें भी वो मोहन शक्ल दिखलाता नहीं॥
रात दिन सीने पै गमकी फ़ौजका होता है वार।
तो भी पापी प्राण ये तनसे निकल जाता नहीं॥
ऐशो अशरत छुटगये ऊधो हमारे एक साथ।
अब सिवाये ग़म कोई साथी नज़र आता नहीं॥
वनके दुश्मन क्या किसी की भी न बिगड़े जगत में।
जिसकी बिगड़ी उसको कोई पास बिठलाता नहीं॥
बिन दरश घनश्यामके बेचैन हैं गोपी 'गिरंद'।
कोई करवट कोई पहलू उनको चैन आता नहीं॥

गजल॥ ४५ ॥ गोपियों की ।

मिलेंगे वो कहाँ आली जिन्हें घनश्याम कहते हैं।
उन्हीं के मुन्ताज़िर हमतो सुबू और शाम रहते हैं॥
जमाना होगया हमको अब उनकी इंतज़ारी में।
बजैया बाँसुरी जिन को कि खासो आम कहते हैं॥
कन्हैया कोई कहता है कोई कहता है मनमोहन।
कोई कहता है की ब्रजराज उनका नाम कहते हैं॥
कभी रहते हैं मथुरा में कभी रहते हैं वृन्दावन।
कभी गोकुल व बरसाने से आली धाम रहते हैं॥
चैन पड़ता नहीं हमको 'स्वरूप' एकउनके दर्शनविन।
कि जिनका श्यामसुंदर ग्वाल गोपी नाम कहते हैं॥

गज़ल ॥ ४६ ॥ गोपियोंकी ।

मुक़द्दर जिसघड़ी ऊधो पलट अपना ये जाता है ।
जान फिर उसघड़ी जो मित्र है वो भी बचाता है ॥
हुई बेरन वो क्या कुब्जा ज़माना होगया बैरी ।
देखते हैं जिसे वोही बैर हम से बिसाता है ॥
उठाये जिसकी ख़ातिर रंजोग़म हमने ये ऐ ऊधो ।
वोही लिख२के हमको जोगकी पतियें भिजाता है ॥
बुरी होती है ज़ालिम ये लगी इस दिलकी ऐ ऊधो ।
जानता है वही इसके कि जो सदमे उठाता है ॥
पाप कटजाते हैं अगले पिछले सब उसके 'मिरंद' ।
जो राधेश्याम के चरणोंसे चित अपना लगाता है ॥

सेहरा गजल ॥ ४७ ॥ यशोदा की मालन से ।

जारी मालन मेरे मोहन का बनाला सेहरा ।
फूल रंगा रंग के लगाकर तू सजाला सेहरा ॥
हीरे मोती हों जड़े और जड़े हों पुखराज ।
ऐसा हो मेरे कन्हैया का निराला सेहरा ॥
कंगन हाथों में दूँ मैं उस घड़ी डलवा मालन ।
जिस घड़ी सरसे जो बांधे मेरा लाला सेहरा ॥
फूल आकाश से चुन चुन के देवता लाये ।
उनही फूलों का री मालन तू बनाला सेहरा ॥
धन्य संसार में हुआ इस घड़ी देखो तो 'स्वरूप' ।
जिस घड़ी कृष्ण कन्हैया के जा बांधा सेहरा ॥

गजल ॥ ४८ ॥ स्तुति ।

तुम्हींको अलख अविनाशी तुम्हींको राम कहते हैं ।

तुम्हींको मुकुटधर मुरलीमनोहर श्याम कहते हैं ॥
तुम्हींको ब्रह्मा व विष्णु भी तुम्हींको शिव व शंकर भी।
तुम्हीं को निर्विकार एक ज्योति अपरम्पार कहते हैं॥
तुम्हींको कच्छ मच्छ वाराह तुम्हींको विप्र अौतारा।
तुम्हींको विश्वका स्वामी भी खासोआम कहते हैं॥
तुम्हींको कृष्ण गोपाला तुम्हीं को नन्दका लाला।
तुम्हींको चोर माखनका अजी घनश्याम कहते हैं॥
तुम्हींको कालीदह जैया तुम्हींको नाग नथवैया।
तुम्हींको 'गिरंद' का रक्षक व चारों धाम कहते हैं॥

गजल ॥ ४९ ॥ गोपियोंकी।

बाँकी अदा वो सांवरा हमको दिखागया।
दिल बातों ही बातों में वो लेकर चलागया॥
कानोंमें कुण्डल सरपै मुकुट साँवरी सूरत।
नैनोंमें वो अंदाज वो जोबन समा गया॥
बेचैन है दिल चैन है उस बिन नहीं दिलको।
नाजो अदा दिखाके दिवाना बना गया॥
ढूँढे उसे कोई कहां जिसका नहीं पता।
ना तो पता वो नामो निशां कुछ बता गया॥
बेजार 'गिरंदा' गोपियें फिरती हैं श्याम बिन।
दिखलाके झलक लेके दिल उनका चलागया॥

गजल ॥ ५० ॥ ऊधोसे गोपियों की।

जबसे ऊधो श्याम घर कुब्जाके जो जाने लगा।
ग़म कलेजे को जमीं से नोचकर खाने लगा॥

खाक पड़ जाये जी ऊधो प्रीतिकी इस रीतिपर ।
भूलकर हमको हमें आंखें वो दिखलाने लगा ॥
हमतो घरदर छोड़कर बैठे हैं उस के नाम पर ।
हमसे बच बचकर जो आंखें फेरकर जाने लगा ॥
क्या शिकायत क्या गिला उसका करें ऊधोजी हम ।
जो हमारी छोड़कर सुध हमको बिसराने लगा ॥
ऐसा बहकाया है उस कुब्जाने ऊधो श्याम को ।
हमको पाती जोगकी लिख लिखके भिजवाने लगा॥
फंदमें कुब्जाके फँसकर देखिये वो साँवरा ।
बेधड़क हो हम गरीबों को वो तरसाने लगा ॥
है मुसीबत इन दिनों ऐसी ये अब हमपर 'गिरंद'।
मित्रभी अब तो हमारा हमसे फिर जाने लगा ॥

गजल ॥ ५१॥ गोपियों की।

जुदाई श्यामकी ऊधो नहीं दिलको गवारा है ।
बुरी क़िस्मत हमारी है या कुब्जा का इशारा है ॥
उठाते ही उठाते ग़म ज़माना होगया हमको ।
हाल दमपर ही दम बदतर हुआ जाता हमारा है ॥
बुरा उसका हो ऊधोजी कि जिस बैरनने देखो तो ।
छुड़ाकर श्यामको हमसे हमें बिन मौत मारा है ॥
ढूँढती फिरती हैं ऊधो उन्हें हम देखिये बन बन ।
जिन्होंने हमको ऊधोजी बस एकदम से बिसारा है ॥
उबारो सबसे ऐसे ही 'गिरंद' को भी ऐ स्वामी ।

कि जैसे गोपियोंको प्रेमसे तुमने उबारा है ॥

गज़ल ॥ ५२ ॥ गोपियोंकी ।

सैकड़ों तान बंशीमें वो मनमोहन सुनाता है ।
हमारा दिल वो किस आनन्दसे देखो लुभाता है ॥
देखिये श्यामकी बंशी हमारी होगई बेरन ।
भनक पड़ते ही कानों में नहीं बस चैन आता है ॥
ज़रासी बांसकी बंशीने एक आफ़त उठाई है ।
बोल जो भी निकलता है कलेजे पार जाता है ॥
नहीं मालूम जाने कौन से वनकी है ये बंशी ।
चैन पड़ता नहीं जिसवक्त वो आवाज़ आती है ॥
कियाहै तप कोई बंशी ने जाने 'गिरद'क्या ऐसा ।
लगाकर मुँहसे मनमोहन नहीं मुँहसे हटाता है ॥

गजल ॥ ५३ ॥ गोपियों की ।

जब सखी घनश्याम बिन घनघोर घिर आने लगे ।
दमक दामिनकी व बादल गरज बरसाने लगे ॥
रैन अंधियारी वो काली सेज पग कैसे धरें ।
वनके बैरी अब हुयें दादुरभी डरपाने लगे ॥
पीपी पपीहा इतकरे उत बोलते हैं बन में मोर ।
बोल इन सबके कलेजे पार अब जाने लगे ॥
भरगई नदियें वा नाले अब कोई आये न जाय ।
भेजते हैं खत भी तो वह लौटकर आने लगे ॥
ग़म कलेजा खागया तिसपर भी है हालत वही ।

देखकर दुशमनभी इस हालतको ग़म खानेलगे ॥
मित्र जो जो भी हमारे थे अजी वह इनदिनों ।
फेरकर मुँह हमसे बच बचकर निकल जाने लगे ॥
यह परेशानी की हालत हम कहैं किससे 'गिरंद'।
दुशमनीसे मित्रकी तो पेश अब आने लगे ॥

गजल ॥५४॥ कृष्ण की ललितासे।

हमें राधेसे तुम ललिता मिलादोगी तो क्या होगा।
लगी दिल की तुफैल आगने बुझादोगीतोक्याहोगा॥
तरक्की बेकलीकी और तक़ाज़ा बेक़रारी का।
हमारा इनसे तुमपीछा छुटादोगी तो क्या होगा॥
गई हैं बेवजह हम से हमारी रूठ कर प्यारी।
मनें वह जिसतरह उनको मनादोगी तो क्याहोगा॥
तरसखाकर जो तुम हमपर हमें एकबार ही ललता।
झलक उसप्राणप्यारी की दिखादोगी तो क्या होगा॥
ये कहियो उनसे तुम ललता हमारी ओरसे जाकर।
ज़रा घूँघटको मुख पर से हटादोगी तो क्या होगा॥
तड़पतेही गुजर जाते हैं हमको रैन दिन दोनों।
हमें तुम इन मुसीबत से बचादोगी तो क्या होगा॥
'गिरंद' दास की नैया मदनमोहन व राधे जी।
पार संसारसागर से लगाओगी तो क्या होगा॥

गजल ॥ ५५ ॥ ललिता की राधेजी से।

आज प्यारीजी मनमोहन मनाने तुमको आये हैं।

खड़े हैं द्वार कर जोड़े अजब हालत बनाये हैं ॥
वो जब कहते हैं प्यारीजी तो हमसे येही कहते हैं।
मनाने प्राणप्यारीको हम अपनी आज आये हैं ॥
कई दिनसे उन्होंने कुछ न खाया और पिया हैगा।
तुम्हारे नाम के आधार पर तन मन लगाये हैं ॥
है राधे राधे ही रटना ये हरदम हरघड़ी उनको।
इसी से है ग़रज़ उनको इसी से लौ लगाये हैं ॥
'गिरंदा' गाइये जबलौं तू राधेश्याम के ही गुण।
जो गुण गाते हैं उनके स्वर्गकी पदवी वो पायेहैं ॥

गजल ॥ ५६॥ राधे की ललिता से।

वहीं जायें वो अब ललता जहां पर रोज़ जाते हैं।
ग़रज़ अबहै न कुछ हमकोन हम उनको बुलाते हैं॥
तुम्हें ललता हमारी सौं यही कहिये हटो उनसे।
श्याम तुम से छओरोंको नहीं हम मुहँ लगाते हैं ॥
न आवें भूल करके भी हमारे घर वो अब कहियें।
जायँ उनकेही घर पैग़ाम जिनके घरसे आते हैं ॥
हमारे द्वारपर ललता न आवें अब कभी मोहन।
रहा क्या कामहै उनका यहां अब क्यूं वो आते हैं॥
सखी घर घरके फिरने की पड़ी है बान अब उनकी।
रहें अब वो जहाँ चाहें यहां बेकार आते हैं ॥
यही कहती हैं राधे श्यामसे अब शिवचरन छूलो।
नहीं मानुंगी मैं जबतक मुझे वो क्यूँ मनाते हैं ॥

॥ श्रीः ॥

हरिकीर्तन-

# [illegible]

## दूसरा भाग

जिसको

रियासत रामपुर निवासी-

कविवर ठाकुर गिरन्दसिंह ने

बनाया



कैलासचन्द्र

मैनेजिंग प्रोप्राइटर फर्म
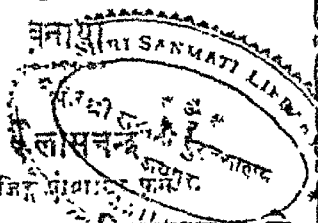
गणेशीलाल लक्ष्मीनारायण ने

लक्ष्मीनारायण यन्त्रालय

मुरादाबाद में

छपाकर प्रकाशित किया।

मार्गशीर्ष, सं० १९७८

Printed by Kailasachandra

at the Lakshmi Narayan Press Moradabad.

श्रीविपिनविहारिणे नमः ।

# गज़लसंग्रह

## दूसराभाग

गज़ल ॥ १ ॥ ललिताकी कृष्णसे ।

तुमसे प्यारीजी ने मिलनेकी क़सम अब खाई है ।
कहती हैं ऐसोंसे मिलने में बहुत रुसवाई है ॥
मैंने समझाया बहुत और बहुतही उन से कहा ।
ख्याल में तो भी न उन के बात कोई आई है ॥
मैं या तुम उनसे कहैं मानेंगी वो तौभी नहीं ।
कोई बैरन अब शिकायत आपकी कर आई है ॥
उस चुगल का काला मुँह हो और नीले हाथ पैर ।
जिसने प्यारीजी से मनमोहन की चुग़ली खाई है ॥
सरसब्ज वोभी न हरगिज़ जीतेजी हो शिवचरन ।
अपने स्वारथको करे जो गैरकी रुसवाई है ॥

गज़ल ॥ २ ॥ कृष्ण की ललितासे ।

हो बुरा इस दिलका जो इस दिलको चैन आता नहीं ।
क्या करें हम हमसे बिन राधे रहा जाता नहीं ॥
होगई मुद्दत ज़माना होगया है बिन दरश ।
चांद बदलीमें गया है छिप नज़र आता नहीं ॥
चैन बिन प्यारी नहीं पड़ता है हमको एक पल ।
उनको तोभी तो हमारा ख्याल कुछ आता नहीं ॥
रैन दिन उन बिन तड़पते ही गुजर जाने लगा ।
कोई करवट कोई पहलू हमको चैन आता नहीं ॥
होता है ऐसी ये अब दिलकी लगी देखो 'गिरंद' ।
रंजो ग़म कोई घड़ी और कोई दम जाता नहीं ॥

गज़ल ॥ ३ ॥ कृष्ण की ललितासे ।

राधेही राधे अब तो दिल में समा रहा है ।
दर्शन को भी उन्हीं के दिल चुलबुला रहा है ॥
राधेका ख्याल दिलसे हटता नहीं कोई दम ।
अब तो दिलो जिगर में येही समा रहा है ॥
राधे बिन दिल हमारा हमको अरी ये ललता ।
वहशी बना रहा है बन बन फिरा रहा है ॥
जबसे वो प्राणप्यारी रूठी हैं हमसे ललता ।
मिलने की लौ तभीसे ये दिल लगा रहा है ॥
हरदम 'गिरंद' ग़मकी रहती दशा है सरपर ।
ये दिन करम हमारा हमको दिखा रहा है ॥

गजल । ४ ॥ कृष्ण की राधे से ।

तुमको प्यारीजी न इतना मान करना चाहिये ।
हम गरीबों पर तो तुमको ध्यान धरना चाहिये ॥
चूक जो कुछ भी हुई है हमसे करके माफ वो ।
फिर हमें प्यारी कलेजे से लगाना चाहिये ॥
दिल दुखों पर गमज़दों पर इतनी किर्पा कीजिये ।
नाम अपना काम दूसरे का बनाना चाहिये ॥
जिसने जानो तन किया अरपण तुम्हारे नामपर ।
उससे तुमको भी न प्यारी रूठजाना चाहिये ॥
चोट कारी इश्ककी जिस के लगी दिलपर 'गिरंद' ।
कुछ न कुछ उसपर तो देखो रहम खाना चाहिये ॥

गजल ॥ ५ ॥ राधे की श्याम से ।

वहीं तशरीफ लेजावो जहां से तुम जो आये हो ।
काम यां आपका क्या है यहाँ क्यूँ आप आये हो ॥
न मानूँगी न मानूँगी न मानूँ मैं चले जाओ ।
जाओ उस सौतके जिस सौतके जो तुम सिखाये हो॥
नहीं हम मुँह लगाते हैं श्याम तुम से छलियोंको ।
लगाये मुँह तुम्हें वोही जिन्होंने तुम सिखाये हो ॥
न आना भूलकरके भी हमारे द्वार पर अब तुम ।
न मतलब है हमें तुमसे न हमने तुम बुलाये हो ॥
'गिरंद' मुँह फेरकर राधे श्याम से येही कहती हैं ।
द्वारपर से हटो मेरे खडे क्यूँ सर झुकाये हो ।

गज़ल ॥ ६ ॥ कृष्ण की राधे से।

चैन तुम बिन दिलको प्यारी एक पल होता नहीं।
बस में दिल होता मेरे तो जान मैं खोता नहीं ॥
दिलने बेबस करदिया और करदिया बेज़ार है।
चैन दिल देता तो मुँह अश्कों से मैं धोता नहीं ॥
रात भर तुम बिन प्यारी यूँ गुज़रती है मुझे।
एक पल भर भी तो बिस्तर पर ज़रा सोता नहीं ॥
ठोकरें दर दरकी क्यूँ खाता मैं फिरता दरबदर।
तुख्म उल्फतका अगर प्यारी जो मैं बोता नहीं ॥
प्रेमके वस 'गिरंद' हो सकते हैं लीला हर हरएक।
प्रीत की उस रीतका तोभी बदल होता नहीं ॥

गज़ल ॥ ७ ॥ राधे की कृष्ण से।

हम ख़ूब जानते हैं घातें मोहन तुम्हारी।
जाओ न भूलकर भी आना गली हमारी ॥
दिन रात जिनके घर जो रहते थे उन के जाओ।
हमको नहीं ज़रूरत कुछ है यहाँ तुम्हारी ॥
कुब्जाके घर ही जाओ जाओ यहाँ न आओ।
उसके ही घर रहो अब वोही है प्राणप्यारी ॥
विन्ती करो उसी की पैयाँ पड़ो उसी के।
छिप छिपके हमसे जिस के जाते हो घर मुरारी ॥
मानूँगी अब तभी मैं खावोगे जब क़सम तुम।
कहती हैं 'गिरंद' हरसे हरबार येही प्यारी ॥

ग़ज़ल ॥ ८ ॥ कृष्णकी राधेसे।

जानोतन मेरा तो प्यारीजी ये तुमपर वार है ।
मैं हूँ तावेदार मुझको तुमसे क्या इनकार है ॥
दिलपे सदमे सहते सहते दिल दिवाला होगया।
तोभी प्यारी दिल तुम्हारा ही ये आशिकज़ारहै
है ख़ता मेरी या जो कुछभी है प्यारीजी कुसूर।
माफ़ करना उसका वस अब आपकेइख़्त्यारहै॥
रूठो तुम एकबार मुझसे तुमको तो सौबार मैं ।
लाऊँ प्यारीजी मनाकर मैं मुझे इख़त्यार है ॥
होगई राधाजी खुश सुन श्यामकी बातें 'गिरंद'।
वोही उल्फ़त और मुहब्बत वोही उनका प्यारहै॥

ग़ज़ल ॥ ९ ॥ गोपियोंकी ऊधोसे।

श्यामकी चुलबुली बातें हमें जब याद आती हैं।
तो रो रो नीर नैनोंसे हम ऊधोजी बहाती हैं ॥
कभी कुंजोंमें जा खेले कभी यमुना किनारे पर।
ये बातें श्यामकी ऊधो हमें हरदम रुलाती हैं ॥
लगी दिलकी हमें जाने ये क्या २ दुख दिखायेगी।
परेशां हाल हम देखो ख़ाक फिरती उड़ाती हैं ॥
न सुध घरकी है कुछहमको न सुध तनमनकीहै हमको।
इसी हालत में हम ऊधो जन्म अपना गमाती हैं ॥
शिकायत 'गिरंद' गोपी श्यामकी करकरके ऊधोसे।
फिर अपना दर्ददिल देखो खड़ी उनको सुनाती हैं ॥

गज़ल ॥ १० ॥ गोपियोंकी ऊधोसे।

रंजोग़म ऊधो हमें उस दिनसे खाना होगया।
श्यामका जिस दिनसे घर कुब्जाके जाना होगया॥
करलिया है बसमें उस कुब्जाने ऊधो श्यामको।
बस कठिन अब उनका उसके घरसे आना होगया॥
घर हमारे क्यूँ वो अब आवेंगे ऊधोजी भला।
जब कि घर कुब्जाके रहने का ठिकाना होगया॥
क्यूँ सुनेंगे आके वो ऊधो हमारा दर्द दिल।
अबतो उस कुब्जापै उनका दिल दिवाना होगया॥
मारी मारी फिरती थी वो कुब्जा दरबदर।
आज उस कुब्जाका क्या ही कारखाना होगया॥
प्रीत में घनश्यामकी ऊधो तुम्हारी सौं हमें।
दिलपै सदमे सहते सहते एक ज़माना होगया॥
ऐ'गिरदा' दिल लगाया जिसने राधेश्याम से।
उसका ही वैकुंठ में जानो ठिकाना होगया॥

गज़ल ॥ ११ ॥ गोपियों की ऊधो से।

शाद कुब्जाको वो ऊधो हमें नाशाद करते हैं।
हैं दासी उनकी हम वो क्यूं हमें बरबाद करते हैं॥
हमारा कर्म ही ऊधो बुराई पर हमारी है।
ये सब बेकार उनकी तुमसे हम फ़रियाद करते हैं॥
गये एक साथही सुधबुध हमारी भूल मनमोहन।
लगी दिलको हमारे है हमीं अब याद करते हैं॥
जलाकर खाक तन मनको किया उन हेत है हमने।

वो इसपर भी तो ऊधोजी हमें बरबाद करते हैं॥
गये खाना यों वीराना हमारा कर मदन मोहन।
सौत कुब्जाका घर देखो वो अब आबाद करते हैं॥
करें जो उनका जी चाहे जुलम हमपर वो ऊधोजी।
हम उनका अब गिला उनके नहीं कुछ याद करते हैं॥
'गिरदा' ब्रजके जितने हैं गोपी ग्वाल ये देखो।
खड़े सब श्यामकी ऊधोसे बस फ़रियाद करते हैं॥

गज़ल ॥ १२ ॥ गोपियोंकी।

बाँकी अदा वो सांवरा हमको दिखा गया।
मन हरके हमारा ये उसी दम चला गया॥
कानों में कुंडल सिर पै मुकुट साँवरी सूरत।
नैनोंमें वो अंदाज वो जोबन समा गया॥
बेचैन है दिल चैन है उस बिन नहीं दिलको।
बैठे बिठाये दिलको दिवाना बना गया॥
ढूंढें कहां उसे नहीं जिसका कहीं पता।
नामो निशां न कुछ वो पताही बता गया॥
होती है बुरी दिलकी ये ज़ालिम लगी 'गिरद'।
जो इसमें फँसा सदमे ही सदमे उठा गया॥

गज़ल ॥ १३ ॥ गोपियोंकी ऊधोसे।

क्या बुरी होती है ऊधोजी ये दिलकी बेकली॥
मारी मारी देखिये फिरती हैं हम कूंचे गली॥
बनके जोगन ली है सुमरन हमने उसके नामकी।
जिसके खातिर भस्म सारे तनसे है हमने मली॥

हो बुरा कुब्जाका ऊधो हो बुरा उस सौतका ।
तोड़ी है जिस सौतने वो देखिये कच्ची कली ॥
छोड़कर ब्रजको गये जिसदिनसे ऊधोजीमोहन।
है उसी दिनसे वो कुब्जा देखिये फूली फली ॥
गोपियोंको जान मनमोहन बुरा देखा 'गिरंद'।
बैठे हैं कुब्जा के घर वो जानकर उसको भली ॥

गज़ल ॥ १४ ॥ माताकी ध्रुवसे ।

तेरी बातेंये सुन सुनकर उड़ा दिलमेरा जाता है।
कहां है राम मिलने को तू जिनसे लाल जाता है॥
किसे कहकर ध्रुव बेटा मैं इस घरसे पुकारूँगी।
उजाले घरमें अँधेरा करे क्यूँ लाल जाता है॥
लगाकर आग इसघरको फूँकमहलोंदुमहलेसब।
पीटती सर चलीजाऊँ यही अब दिलमें आता है॥
मौतभी होगई दुश्मन दुश्मनी मुझसे करती है ।
कर्मभी होगया बैरी बैर मुझ से बिसाता है ॥
आँखसे ओट होतेही निकल जायेगा दम मेरा।
मुझे क्यूं दिन मुसीबतके ये जीतेजीदिखाता है॥
'गिरंदा' हो सबरा दिलको नादिलको चैनहोसुतबिन।
हमारा कर्म ही बैरी ये दुख हमको दिखाता है ॥

गजल ॥ १५ ॥ ध्रुवकी मातासे ।

मिलूं उसरामसे जिसका कि कुलआलम पैसायाहै।
ज़मीनो आसमां मैं औ तुम्हें जिसने बनाया है ॥
सबर इस बेसबर दिलको नहीं बिन रामदर्शनहो।

दिलोजाँ और हिरदे में मेरे वोही समाया है ॥
चैन होवे उसीदम रामसे जिस दम मिलूं जाकर ।
ध्यान उसके ही चरणोंसे ये अब मैंने लगाया है ॥
रामदर्शन ही की अबतो लगी है लौ मुझे माता ।
दरश बिन मैं तो जानूं ये मेरी बेकार काया है ॥
'गिरंदा' अपनी हस्तीको मिटा उस नाम के ऊपर।
नाम ऐसा वो जिसका कि यश वेदोंने गाया है ॥

गजल ॥ १६ ॥ माताकी ध्रुव से ।

सुनता नहीं वो ईश्वर फ़रियाद अब हमारी ।
किससे कहें लगा है जो दिलपै ज़ख्मकारी ॥
इकलौता लाल हमसे जब छुटगया हमारा ।
क्या खाक जिंदगी है उस बिन ये फिर हमारी ॥
कैसे जिये वो माता छुटजाय पुत्र जिसका ।
सिर पीट पीट कर ही मरजाय ग़मकी मारी ॥
मेरी दुआसे तू हे परमात्मा हे ईश्वर ।
औलाद का किसी को कीजो न तू दुखारी ॥
मा बापसे जो बेटा छुटजाय 'गिरंद' जिस का ।
उस ग़मज़दा के दिलको क्यूँ कर हो फिर क़रारी॥

गज़ल ॥ १७ ॥ ध्रुवकी माता से ।

रामका नाम जिस दिनसे मेरे दिलमें समाया है ।
उसी दिन से मगन मन हो ध्यान मैंने लगाया है ॥
मनुष्यतन पायकर जिसने किया नहीं रामका सुमरन ।

तो इस संसार में विरथा जनम उसने गमाया है ॥
हुई है मुझपै प्रभुता रामकी तो रामने माता ।
मेरी गफ़लत का पर्दा मेरे हिरदे से हटाया है ॥
खुशी हो रामके दर्शनकी आज्ञा दो मुझे माता ।
दरश बिन मुझको मेरे दिलने दीवाना बनाया है ॥
'गिरंदा' राम सुमिरनको किया संसार में जिसने ।
और वैकुंठकी पदवीको बस उसने ही पाया है ॥

ग़ज़ल ॥ १८ ॥ माता की ध्रुवसे ।

जिऊंगी कैसे मैं बेटा दिवानी हूँ तेरे दमकी ।
झड़ी तुझ बिन थमें एकपल न मेरे चश्मसे गमकी ॥
सब से बैठी थी मैं तो तेरी उम्मीद पर घर में ।
सो तूने बालपनसे ही मुहब्बत लाल अब कमकी ॥
आमथी सुखकी बदले सुखके तूने दुख दियामुझको ।
छुटी वो आस अब पैदा हुई ये दुख के आगमकी ॥
सखी है तो मुझे तू है सूर है तो मुझे तू है ।
हकीकत है तेरे आगे न रुस्तमकी न हातिमकी ॥
'गिरंदा' यादे ईश्वरसे लगा रख ध्यान तू अपना ।
हवा कुछ होरही है इन दिनों बेतोर आलमकी ॥

ग़ज़ल ॥ १९ ॥ सहरा श्रीरामचन्द्रजी का ।

रामचन्द्र के जो दशरथने बँधाया सेहरा ।
हूरो परियों ने भी फिर धूमसे गाया सेहरा ॥
ऋषी मुनी कि जो थे स्वर्ग के रहने वाले ।

देवताओं ने उन्हें सब को सुनाया सेहरा ॥
देवता लाये हैं चुन चन्द्रपुरी में कि जो फूल ।
उन्हीं फूलों का है इन्द्र गूंद के लाया सेहरा ॥
साथ फूलोंकी लड़ी के हैं व मोतीकी लड़ी ।
हीरे पुखराज लगाकर वो बनाया सेहरा ॥
पदवी वैकुंठकी मिलती है 'गिरंदा' उस को ।
ध्यानसे जिसने सुना और ये सुनाया सेहरा ॥

ग़ज़ल ॥ २० ॥ रामचन्द्रकी माता से ।

पिताकी है हमें आज्ञा हम माता बनको जायेंगे ।
नहीं हट लौटकर चौदहवरस तक बनसे आयेंगे ॥
कहें करजोर हम तुमसे देओ आज्ञा हमें तुमभी ।
पाय आज्ञा तुम्हारी हम सुरत बनकी लगायेंगे ॥
इरादा है यही माता समाई है यही दिल में ।
पियें अब हम यहां पानी न हम खानेको खायेंगे ॥
हमें जो दम है अब इसजा सोई दम है कठिन माता।
है मञ्ज़िल सरपे आज्ञा आप जब दोगी तो जायेंगे॥
उन्हींका जानो तन यहहै उन्हीं की बनको आज्ञाहै ।
काम उनके न आये तो काम हम किसके आयेंगे ॥
पदारथ है नहीं जगमें पिता माता से कुछ बढ़कर ।
विमुख माता पितासे जो हैं वह यमदंड पायेंगे ॥
'गिरंदा' पाहुना दुनियामें तू भी चन्द दिन का है ।
रामहीराम कहु वो रामही सुरपुर पठायेंगे ॥

गज़ल ॥ ॥ २१ ॥ माताकी रामचन्द्रजी से ।

फ़लक बे पीर ये सदमे मुझे तू क्यूँ दिखाता है ।
मेरे इस लालको मुझसे अरे ज़ालिम छुड़ाता है ॥
दाग़ औलाद का माता पिताके दिल पै होता है ।
न जाता है मरे पर भी न जीते जी ये जाता है ॥
कटारी मार मर जाऊँ या विष मैं बस अभी खाऊँ ।
रहूँ जिंदा न मैं ईश्वर मुझे तू क्यूँ जिलाता है ॥
फूँक घरबार ये सारा डालकर खाक में सरमें ।
निकल जाऊँ किसी जंगल को जी मेरा ये चाहता है ॥
'गिरंद' किस किस मुसीबतसे ये मैंने लाल पाला है ।
सो मेरा कर्म बैरी मुझसे अब इसको छुड़ाता है ॥

गज़ल ॥ २२ ॥ रामचंद्रकी माता से ।

लिखा तक़दीरका माता नहीं कोई मिटाता है ।
बिगाड़े है किसीकी और किसी की ये बनाता है ॥
ख़ता इसमें न माता की न है इसमें पिताजी की ।
लिखा जो कर्मका होता है आगे वोही आता है ॥
ये रिश्ता और नाता जो भी है सो जीते जीका है ।
निकलतेही स्वांस फिर माता न रिश्ता है न नाता है ॥
करो आज्ञा मुझे बनकी तो बनको जाऊँ मैं माता ।
वक्त दमपर ही दम बदतर हुआ बेकार जाता है ॥
शीश चरणों में कौशल्याके धरकर राम यूँ बोले ।
कर्म देखो हमारा हमको जाने क्या दिखाता है ॥

तुम्हारे दिलके सदमे को जानता है ये दिल मेरा।
करूँ कैसी पिताका भी कहा नहिं फेरा जाता है॥
लिखा विधनाने है जोभी मिटायेसे नहीं मिटता।
किया है कर्म जैसा जिन 'गिरंद' वैसा वो पाता है॥

गज़ल ॥ २३ ॥ माताकी रामचंद्रसे।

जान खोदूँगी न जाने दूँगी बनको लाल मैं।
किससेदुख सुखका कहूँगी जाके तुझ बिन हाल मैं॥
लाके विष मुझको पिलायेजा ज़रा तू घोलकर।
फूँक मुझको फिर तू वो करियो जो आये ख्यालमें॥
फांसा है चारों तरफ़ से इसतरह ग़मने मुझे।
जिसतरह मक्खीको मकड़ी फांसती है जाल में॥
ठोकरोंपर छोड़ मुझको चलादिया बनको तू लाल।
क्या इसी उम्मीदपर तुझको रही थी पाल मैं॥
ऐ 'गिरंदा' मौतभी बैरन नहीं आती मुझे।
किस मुसीबत रही हूँ फँस मैं किस जंजाल में॥

गज़ल ॥ २४ ॥ रामचंद्रजीकी माता से।

राम तो माता पिता दोनों का ताबेदार है।
मेरे जानोतन का माताजी तुम्हें इख्त्यार है॥
बेच लो मुझको भरे बाज़ार माता तुम अभी।
मैं हूँ ताबेदार मुझको कुछ नहीं इनकार है॥
बनको जानेसे अगर करता हूँ जो इनकार मैं।
तो ये जगजीवन मेरा माता मुझे धिक्कार है॥

पुत्र माता और पिता दोनों की आज्ञा में है जो ।
प्राण छुटतेइ स्वर्गकी पदवी उसे तैयार है ॥
जाऊँगा माता न बिन जाय रहूं बन को मैं अब ।
अब 'गिरंद' रुकना मेरा इसजा बहुत दुशवार है ॥

गजल ॥ १५ ॥ माताकी रामचंद्रसे ।

कैसे इस बेचैन दिलको चैन मेरे होयगा ।
बिन तेरे सूना मुझे संसार सारा होयगा ॥
कैसे देखूंगी मैं खाली सेज महलों में पड़ी ।
तू भयानक बन में सुत कांटों में जाकर सोयगा॥
खाक पड़जाये इसधनसंपतपै और इस राजपर।
किसको सौंपूगी मैं इसका कौन मालिक होयगा॥
मैं तो दुखमें सुत तेरे रो रोके ही मरजाऊंगी ।
कौन दुखपूछेगातुझबिनकौनतुझबिन खोयगा ॥
तू बड़ा बेदर्द है ईश्वर दरद तुझको नहीं ।
दिलदुखोंका दिलदुखाकर क्या तुझे फलहोयगा ॥
कैसे पत्थरकी सिला बैठूगी छाती से अड़ा ।
कैसे दिल दलगीरको मेरे सबर सुत होयगा ॥
किसको कहके राम इस घर में पुकारूंगी 'गिरंद'।
किससे पूछूंगी कि सुत मेरा कहां अब होयगा ॥

गजल ॥ १६ ॥ मंदोदरी की रावणसे ।

मन्दोदर पीटती सिर रोती रावण पास आईहै ।
भली रघुबीर से तुमने पिया ठानी लड़ाई है ॥

भेज रणमें मेरे रणशूरको बैठे हो तुम घरमें।
बेधड़क होके गर्दन लाल की मेरे कटाई है॥
चले थे सुर असुर कंधों पे धरके पालकी जिनकी।
खराबी उनकी तुमने चील कौओं से कराई है॥
जान खो दूं गी मैं अपनी पुत्रके गममें अभी।
कलेजा खालिया गमने तबाही पर तबाही है॥
न मानी तुमने मेरी मैंने समझाया बहुत तुमको।
पराई नार घरका नाश करने को बिठाई है॥
लड़ो मत राम लक्ष्मणसे लड़ो मत मानलो कहना।
शूर ऐसे हैं वो जगमें फिरी उनकी दुहाई है॥
खड़ी विपताकी मारी कहती है रावण से मंदोदर।
'गिरद' विगड़ा किसीका क्या पड़ी हमपर तबाई है॥

ग़ज़ल ॥ २७ ॥ रावण की मंदोदरीसे।

धनुष जब क्रोध में आकर लंकपति ने उठाया है।
न छोडूं उनको मैं ज़िन्दा काल अब उनका आया है॥
मेरे इस बाणके आगे चलेगी कुछ नहीं उनकी।
एकही बाणमें सर जानियो उनका उड़ाया है॥
बहादूं रुधिरकी नदियें मैं जाकर रणमें एक दमसे।
समाई है यही दिलमें शस्त्र यूँही उठाया है॥
धर्मशूरों का रणमें जाके लड़ने ही का है प्यारी।
धर्मसे जो हटा उसने दाग कुलको लगाया है॥
शूरमा है वो क्या जिनको कि मारा रीछ बन्दरोंने।

शूरमा हूँ वही लाखों जिन्होंने सर उडाया है ॥
काटलूँसिर न मैं जब तक अरी उन राम लक्ष्मणाका ।
करूँनहिं अन्नजल तबतक यही दिलमें समाया है ॥
लियातो जायगी उसदम कि जिसदम जान जायेगी ।
'शिवचरन' अबतो रावण इस इरादे परही आया है ॥

गज़ल ॥ २८ ॥ मंदोदरीकी ।

ग़म में अपने लालके रो रो के मैं मरजाऊँगी ।
अब पता उस प्राणप्यारे का कहां मैं पाऊँगी ॥
उसको सूखे में सुलाया सोई मैं गीले में आप ।
भूल कैसे वो घडी वो दिन मैं दुखिया जाऊँगी ॥
काँपते थे देख जिस सूरत को धरती आसमाँ ।
याद उस सूरत को करकरके ही मैं मरजाऊँगी ॥
देखो मेरे कर्मने मुझको ये दिखलाया है दिन ।
कैसे मैं ये दुख सहूँगी कैसे दिल समझाऊँगी ॥
कुछ कही मुझसे न कुछ मेरी सुनी सुतने मेरे ।
खाके ऐसा दाग़ क्या जीती मैं अब रहजाऊँगी ॥
दाग़ परही दाग़ देता है वो परमेश्वर मुझे ।
बाग़ दाग़ों का किसे बिन लाल मैं दिखलाऊँगी ॥
टूटे अंबर अबतो फट जाये या ये धरती 'गिरन्द' ।
चैन जब होगा समा इसमें जो जब मैं जाऊँगी ॥

गज़ल ॥ २९॥ रावणकी मंदोदरी से ।

जाके मैं संग्राम से खाली न फिरकर आऊँगा ।

काटकर सिर राम लक्ष्मण का इसीदम लाऊँगा ॥
लाश पर ही लाश रणमें डालकर अब तो हटूं ।
देखूं उनकी वीरता अपनी उन्हें दिखलाऊंगा ॥
लौट दूं एकदम से धरती आसमां जाते ही मैं ।
करके पलय रणमें तो हटकर वहां से आऊंगा ॥
नाम है रावण मेरा तो पुत्रके बदले में आज ।
चील कौओं को मैं उनके मांस को खिलवाऊँगा ॥
क्या कोई दुनिया में जानेगा कि कोई शूर था ।
दुनिया जानेगी तभी जब नाम कुछ करजाऊँगा ॥
लेगये क्या वो था इकछत राज जिनका विश्व में ।
क्या मैं सिरपर धरके ये 'लंका' अरी लेजाऊँगा ॥
कैसे कैसे शूरमा पैदा हुये और मर गये ।
मैं भी एकदिन बावरी ऐसे ही बस मर जाऊँगा ॥
कहता है रावण वो मन्दोदरसे बस येही 'गिरंद' ।
अबतो सरही काटकर लाऊँ तो मुँह दिखलाऊँगा ॥

गज़ल ॥ २० ॥ मन्दोदरीकी रावण से ।

मत लड़ो पति रामसे वह विश्वके सरदार हैं ।
सुर असुर जोभी हैं सो बस उनके तावेदार हैं ॥
जीव चौरासी पिया आधीन हैं उन के सभी ।
सब के ए पति बस वो दीनानाथ ही मुख्तयार हैं॥
देके सीता मिललो उनसे मत लड़ो मानो कहा ।
लेके सेना आगये वह सिन्धु के इस पार हैं ॥

हो सकेगा उनका बाँका बाल भी तुमसे नहीं।
हैं ये जो बातें तुम्हारी सो पिया बेकार हैं॥
कहती है रो रोके मंदोदर ये रावण से 'गिरंद'।
हमतो समझाते ही समझाते हुई बेज़ार हैं॥

गज़ल ॥ ३१ ॥ रावण की मन्दोदरी से।

राम और रावणकी जो जिसदम लड़ाई होयगी।
बस उसीदम उनसे रावणकी सफ़ाई होयगी॥
या मुझे मारें वो या उनको अरी डालूँ मैं मार।
जब मिटे क़िस्सा तभी ये तै लड़ाई होयगी॥
खूनकी नदी बहे और उसमें तैराते हों सर।
अब तो बस उनसे मेरी यूँही सफ़ाई होयगी॥
है इरादा उनका जो मेरा भी अब तो है वही।
जायगा मारा वही जिसकी कि आई होयगी॥
कालही जिसकाजो सैरपर आगया जिसके 'गिरंद'।
क्या इलाज उसका भला फिर क्या दवाई होयगी॥

गज़ल ॥ ३२ ॥ मन्दोदरीकी रावण से।

तुम क्या कोई लड़ नहीं सकता है लक्ष्मणरामसे।
है वो ऐसे काँपता ये विश्व उनके नामसे॥
क्या हक़ीक़त है तुम्हारी जो लड़ोगे उनसे तुम।
होश उड़ जायेगा होगा सामना जब राम से॥
ख्याल है येही तुम्हारा तो ये खोदेगा तुम्हें।
बैठने घरमें न ये देगा पिया आरामसे॥

हैं बनीके सब, है बिगड़ी का न कोई आशना ।
जोहै पति रखता है वो अपने ही मतलब कामसे ॥
इसलिये पतिप्राण समझाती हूँ मैं दुखिया तुम्हें ।
है तुम्हारा और मेरा साथ सच्चे धाम से ॥
मारी मारी दरबदर तुम बिन फिरूंगी मैं सजन ।
कौन घरमें बैठने देगा हमें आराम से ॥
हर तरह रावणको समझाती है मन्दोदर 'गिरंद' ।
वो यही कहता है मुँह फेरूंगा क्या संग्राम से ॥

गज़ल ॥ २३ ॥ रामचन्द्र और रावणकी ।

धनुष जब रामचन्द्रने जो रावणपर उठाया है ।
तो एकही बाणमें रावणका सिर धड़से उड़ाया है ॥
प्राण छुटते समय रावण लगा यूँ रामसे कहने ।
करूं क्या कालही मेरा जो सरपर मेरे आया है ॥
ज़िमींपर गिरते ही रावण नज़र भर देखकर बोला ।
तुम्हारा पार एक क्या मैं नहीं वेदों ने पाया है ॥
बात सुनकर ये रावण की कहा यूँ रामचंद्रने ।
बदल अभिमान का अपने अरे तूने ये पाया है ॥
'गिरंदा' बे धड़क होकर लड़ा वो रामसे रावण ।
हुआ लाचार बस उसदम कि जिसदम काल आया है ॥

गज़ल ॥ २४ ॥ ईश्वर प्रार्थना में ।

जलवेगरी वो अपनी क्या क्या दिखारहा है ।
हरसू नज़र वही वो मुझको अब आरहा है ॥

कोई फनाकी किश्ती में हो सवार जाये ।
कोई अदम से हमने देखा कि आरहा है ॥
दुनियामें जो कि शै है व्यापक है वह उसी में ।
हर सिम्त वोही अपना जलवा दिखारहा है ॥
जलसे कमल कमल से ब्रह्मा हुये हैं पैदा ।
उस ब्रह्मका उजाला आलममें छारहा है ॥
वादा हो कर न ज्यादह आया है जो वो जाये ।
बेकार जिंदगी पर तू क्यों गुमाँ रहा है ॥
है धर्म ही 'गिरंदा' दुनियामें एक पदारथ ।
धर्मात्माही पदवी सुरपुर की पारहा है ॥

गज़ल ॥ १५ ॥

दर्श संसारसागर में नहीं यमका वो पाते हैं ।
ध्यान परमात्मा में अपना जो निशिदिन लगाते हैं ।
राम के नामसे ही ध्यान हैगा जिनका ऐ प्यारे ।
विमान उनके लिये सज अंत में सुरपुर से आते हैं ॥
पदारथ राम सुमरनके सिवा नाहिं है कोई जगमें ।
हैं जितने जीव दुनिया में सभी गुन उनका गाते हैं ॥
धनीभी वोही करते हैं वही निर्धन भी करते हैं ।
भीख दरदरकी भी वोही जिसे चाहे मँगाते हैं ॥
'गिरंदा' रामसुमरनमें लगा है ध्यान जिनका भी ।
वही आनन्द यहांपर और वहां परभी उड़ाते हैं ॥

गज़ल ॥ २६ ॥

तुम्हीं को ईशा तुमको ही गोकरननाथ कहते हैं।
तुम्हीं को शिव व शंकर भी व भोलेनाथ कहते हैं ॥
तुम्हीं काशीके हो वासी तुम्हीं कैलाश के वासी ।
तुम्हीं को हम अनाथोंका दयानिध नाथ कहते हैं ॥
तुम्हींको हर व तिरलोचन तुम्हींको तिरपुरारी भी ।
तुम्हींको भोलाभाला भी व भोलेनाथ कहते हैं ॥
तुम्हींको गंगाधर भी और तुम्हींको चन्द्रशेखर भी ।
तुम्हींको हर व तुमको ही विश्वम्भरनाथ कहते हैं ॥
तुम्हींको कहते हैं ईश्वर और तुमको ही भूतेश्वर ।
तुम्हींको 'गिरंद' का रक्षक पशुपतिनाथ कहते हैं ॥

गज़ल ॥ २७ ॥

कर भजन ईश्वर का, ईश्वर का भजन एक सार है।
कुछ भरोसा ज़िंदगी का है न कुछ इतबार है ॥
रक्खा है धन जोड़ तूने झूठ या सच बोलकर ।
दम निकलतेही गया नाहिं संग तो बेकार है ॥
जिसके हिरदेमें समाया है जो उस ईश्वरका नाम ।
छूटते ही प्राण भवसे उसका बेड़ा पार है ॥
जिसने उस के नामकी सुमरन या माला हाथ ली।
अन्तमें सुरपुर उसे वह भेजता करतार है ॥
नौ महीने तक रहा है पेट में माता के जो ।
और भी एक रोज़ बस उस के लिये तैयार है ॥

मौतसे जो भी डरा करते थे हरदम हरघड़ी।
लेगई उनको भी उनका आगया जब वार है॥
ऐ 'गिरंदा' मरने जीने का न कर बिलकुल तू ग़म।
तेरा हामी भी मददपर भी वही करतार है॥

गज़ल ॥ २८ ॥

दम निकलते ही जुदा अपने हैं जो होजायँगे।
फूंक नदीके किनारे छोड़ तुझको आयँगे॥
छूके ज्यूं चांडालको न्हाते हैं नर नारी सभी।
तुझको भी छू यूँही भाई बन्धु तेरे न्हायँगे॥
मतसमझ अपना किसीको यादे ईश्वर कर तू बस।
यादे ईश्वर से ही तेरे काम सब बन जायँगे॥
ना तो हैगा तू किसीका ना कोई तेरा यहां।
समझा है अपना जिन्हें दुश्मन वही बन जायँगे॥
मिलता है नरतन ऐ'गिरंदा' ये बड़े एक पुण्य से।
क्या किया है पुण्य हमने हम जो नरतन पायँगे॥

गज़ल ॥ २९ ॥

नहीं क़िस्मत के आगे कुछ किसीकी पेश आती है।
बात वह होके रहती है जो लिख क़िस्मतमें जाती है॥
नहीं मिटती मिटायेसे ये इस तक़दीरकी लिक्खी।
बुरी या और भली जो लिखगई आगे वो आती है॥
हिकायत एक लिखताहूँ मैं इस तक़दीर पर सुनिये।
बिगाड़े भी यही पल में यही पलमें बनाती है॥

एकलख पुत्रथे जिनके सवालख जिनके थे नाती ।
देखिये आज दिन उन के न दीपक है न बाती है ॥
जोड़कर रखते हैं धन और न जो खाते खिलातेहैं।
दमे आखिर में धन वेश्या या बस सरकारखातीहै॥
मौतके आये ना हिकमत न है तावीज ना गंडा ।
आई जिसकी क़ज़ा उसको न कोई शै बचाती है॥
'गिरदा' मौतकी कोई घड़ी ना वक्त है कोई ।
वायदा जोभी है उसका उसी वादे पै आती है ॥

गज़ल ॥ ४० ॥

जिसघड़ी कालिबसे होकर दम जुदा जानेलगा ।
उस घड़ी अफ़सोस क़ालिब करके पछताने लगा ॥
पैदा जिसदिन से हुये दोनों रहे उसदिनसे साथ ।
देके धोखा देखिये अब यह हमें जानेलगा ॥
कुछ रिफ़ाक़त बेवफ़ा बेरहमने हमसे न की ।
करके हमसे घात हमको छोड़कर जाने लगा ॥
था भरोसा जिसका हमको देखिये वोही हमें ।
करके देखो नातवाँ मुँह मोड़कर जाने लगा ॥
है वही साथी मददपर भी वही परवरदिगार ।
ऐ'गिरदा' इसक़दर फिर तू क्यूँ घबराने लगा ॥

गज़ल ॥ ४१ ॥

एकरोज़ इस क़ालिबसे ये निकल जायगी जान ।
कर ईश्वर का भजन भजनसे मुश्किलहो आसान ॥
बिना भजन ये नरतन मिलना होय तुझे दुशवार।

भजन ही है ये सार इसीसे होय तेरा कल्यान ॥
बने भक्त प्रहलाद काज वो सिंह श्रीभगवान ।
उदर विदार तुरतही मारा हिरनाकुश बलवान ॥
धुरू भक्तपर दया करी तो गया विश्व सब जान ।
दिया द्वार वैकुंठके देखो उसका गाड़ निशान ॥
तूने भी बिन भजन 'बिंदा' की है उम्र तमाम ।
पकड़ेगा यम तुझे तेरा जब छुटेगा तनसे प्रान ॥

गज़ल ॥ ४२ ॥

एकरोज़ ऐ यार क़ज़ा का कुलपे वार होगा ।
ईश्वर ही हामी हो वही मददगार होगा ॥
मात पिता साथी ना साथी होय कुटुम परवार ।
पुश्त पै एक तेरी वोही परवरदिगार होगा ॥
राजपाट और महल दुमहलें सभी रहैं क़ायम ।
रहे न तेरा निशां एक तूही फ़रार होगा ॥
काल बली लेजाय तुझे मरघट में धरैं जाकर ।
करें जलाकर खाक खाक का फिर गुबार होगा ॥
जिसदम तेरे क़ालिबसे ये निकल जायगी जान ।
कफ़ेदस्त जंगल में तेरा उसदम मज़ार होगा ॥
जिसने यादेहक़ में हस्ती मिटाई है अपनी ।
उसका बांका बाल यहां ने वहां शार होगा ॥
कर ईश्वरका भजन 'बिंदा' भजन ही है एकसार ।
भजन से ही बेड़ा तेरा ऐ यार पार होगा ॥

गज़ल ॥ ४३ ॥

जो भलाई अन्त में संसार से ले जायगा

कर करके मेरे आगे दुश्मनकी तू बड़ाई।
प्रहलाद क्यूँ तू मेरा तन मन जलारहा है॥
दुनिया में मुझसे बढ़कर है सूरमा न कोई।
मेरे तो दिल में बस अब येही समा रहा है॥
गिरवर से मैं गिराकर डालूँगा मार तुझ को।
फिर कौन देखूं तुझ को आकर बचा रहा है॥
गफ़लत की नींद से तू हुशियार हो 'गिरंदा'।
वक्त अनक़रीब ही अब तेरा भी आरहा है॥

गज़ल ॥ ४७ ॥ प्रहलाद की हिरण्यकशिपुसे।

राम का नाम तो उसदम पिताजी हम से छूटेगा।
हमारे तनसे जिस दम जो हमारा प्राण छूटेगा॥
लगी है राम से डोरी अजी संसार में जिस की।
अन्त में स्वर्ग के आनन्द प्राणी वोही लूटेगा॥
न कोई काल कल पायेगा इस दुनिया में वो प्राणी।
विमुख हो नाम से रघुवर के जो अज्ञानी रूठेगा॥
विमुख जो है पिता हरसे बुरी गत उस की होती है।
अन्त में पकड़ यमका दूत मुँहको उसके कूटेगा॥
'गिरंदा' राम कहने का मज़ा प्रहलाद ने लूटा।
कहेगा राम जो वह भी मज़े ऐसे ही लूटेगा॥

गज़ल ॥ ४८ ॥ चीरहरण।

लेगया वह साँवराजी चीर सब के लेगया।
लेके देखो चीर ऊपर वृक्ष के वह चढ़गया॥
जल से कैसे निकल कर बाहर को अब जायँजी हम।

है वो छलिया छल हमारे साथ देखो करगया ॥
देख हरिको गोपियें कहती हैं यह डरसे खड़ी ।
वृक्ष पर तू क्यूँ हमारे चीर लेकर चढ़गया ॥
हैं उघारी हम खड़ी जल में हमारे चीर दे ।
क्यूंरे क्यू क्यूं बखता पीछे हमारे पड़गया ॥
गोपियें जलमें खड़ी कहती हैं गिरधर से 'गिरंद' ।
चीर मनमोहन हमारे क्यूं छिपाकर धरगया ॥

गज़ल ॥ ४९ ॥ गोपियों से कृष्णकी ।

आओगी जल से जो तुम जिस वक्त होके न्यारी ।
उस वक्त हम सुनेंगे फरियाद ये तुम्हारी ॥
जब तक न जलसे बाहर आओगी तुम निकलकर ।
तब तक खड़ी रहोगी जल में युंही उघारी ॥
कैसे निकल के जल के बाहर को हमी आयें ।
दे वस्त्र हम को दासी हम हैं तेरी मुरारी ॥
वस्तर जभी मिलेंगे बाहर को आओगी जब ।
विन्ती करो जी चाहे पैयां पड़ो हमारी ॥
दासी हमें समझ कर हम पर दया करो अब ।
बेकार हम को प्यारे करते हो तुम दुखारी ॥
जलसे निकलके जिस दम बाहर को आयँगी हम ।
जायेगी लाज उस दम प्यारे मोहन तुम्हारी ॥
कर जोड़ 'गिरंद' गोपी सबकी सभी खड़ी हैं ।
देते हैं चीर उन को तौ भी नहीं मुरारी ॥

साफ़ ही इस लोक से परलोक को वो जायगा ॥
किस ज़ुबां किस मुँह से महिमा को कहूँ ईश्वरकी मैं।
कहते कहते शेष भी और व्यासभी थक जायगा ॥
जिसको चाहे उसको मालामाल वो पल में करे।
जिसको चाहे भीख दरदरकी अभी मँगवायगा ॥
रक्खे हैं कुल काम उसने अपने ही इख़्त्यार में।
भेद उसका शिव न ब्रह्मा और न नारद पायगा ॥
लाख दुश्मन हों मगर हो पुश्त पर परवरदिगार।
हौसला लाखोंका यूंका यूंही बस रह जायगा ॥
पाप से पापी हो प्राणी धर्म से धर्मात्मा।
कर्म जो जैसा करे वैसा ही फल वो पायगा ॥
ऐ 'गिरंदा' धर्मपर जिसने कमर को है कसा।
वोही इस संसार सागर से अमरपुर जायगा ॥

गज़ल ॥ ४४ : हिरण्यकशिपु की प्रह्लाद से।

नाम बैरीका ज़ुबाँपर जिस घड़ी तू लायगा।
उस घड़ी सुत हाथसे मेरे तू मारा जायगा ॥
मत ले मेरे सामने आ आके तू दुशमन का नाम।
ले तू मेरा नाम मेरे नामसे सुख पायगा ॥
पुत्र मेरा होके दुशमन की तरफ़दारी करे।
है बुरी ये बात इसमें ही तू मारा जायगा ॥
म्यानसे बाहर मेरी शमशेर जिस दम होयगी।
सर तेरा उसदम और धड़ से जुदा होजायगा ॥
तेग़ गर्दनपर जब इस के रखदी मैंने शिवचरन।

कैसे इसका मित्र फिर इसको बचाने आयगा ॥

ग़ज़ल ॥ ४५ ॥ प्रह्लादकी हिरण्यकशिपुसे ।

हर गुलमें नज़र मुझको वोही वो आरहा है ।
जलवा उसी का हरसू आलम में छारहा है ॥
ये रामनाम जिसने दिलसे पिता विसारा ।
उसका निशाँ न उसका बाक़ी पता रहा है ॥
उस दिनसे मरने जीनेका ग़म नहीं है मुझको ।
जिस दिनसे राम मेरे दिल में समा रहा है ॥
प्रहलाद का तो जानो तन है ये वार उसपर ।
गुण जिसका ऐ पिताजी संसार गारहा है ॥
लो तुमभी ऐ पिताजी अपनी लगाओ उससे ।
हर रंगमें रंग देखो जिस का दिखारहा है ॥
नहीं मारसकता तुम क्या दुनिया में मुझको कोई
मारेगा मुझको वोई जोके जिला रहा है ॥
प्रहलादके 'गिरंदा' रग रग रुयें रुयें में ।
एक राम रामही बस आवाज़ आरहा है ॥

ग़ज़ल ॥ ४६ ॥ हिरण्यकशिपु की प्रहलाद से ।

ये काल अक़्ल तुझको तेरा बता रहा है ।
बैरीका गुन यूँही तो मेरे तू गारहा है ॥
डालूँगा मार तुझको प्रहलाद जान से मैं ।
गुस्सा मुझे तेरी इन बातों पै आरहा है ॥
बाँधूँगा खम्भ से तो जायेगा भूल उसको ।
जिसको तू मित्र मूरख अपना बना रहा है ॥

ये बेचैनी ये बेताबी मिटादोगे तो क्या होगा ॥
गये हैं जबसे मनमोहन तभीसे लौ है दर्शन की ।
दरश ऊधो हमें उनका करादोगे तो क्या होगा ॥
जो तुम घनश्याम का हम पर दया करके अजी ऊधो ।
सौत कुब्जा से तुम पीछा छुडादोगे तो क्या होगा ॥
'गिरंदा' दास की नैया मदनमोहन व राधेजी ।
पार संसार सागर से लगादोगे तो क्या होगा ॥

गज़ल ॥ ५४ ॥ गोपियों की ऊधोसे ।

रंजो ग़म ऊधो हमें तब से गवारा होगया ।
जब से बस कुब्जाके मनमोहन हमारा होगया ॥
अब क़दम धरतीपे रक्खेगी नहीं कुब्जा वो सौत ।
अब तो उस को श्याम का ऊधो सहारा होगया ॥
मिलगया ऊधो हमें वो श्याम तो पूछेंगी हम ।
छोड़कर तू क्यूँ हमें कुब्जापे प्यारा होगया ॥
क्या खता क्या जाने ऊधोजी हमारी है अजी ।
देखिये जिस परवो हम से श्याम न्यारा होगया ॥
भेजता है जोग लिख तब से वो हमको शिवचरन ।
जब से कुब्जा सौत का उस को इशारा होगया ॥

गज़ल ॥ ५५ ॥ कृष्ण की राधिकाजी से ।

वंशी वो हम को देदो राधेजी तुम हमारी ।
रक्खी है जो छिपाकर तुमने जो प्राणप्यारी ॥

वंशी विन चैन दिल को एक पल नहीं है मेरे ।
गुज़रे है तड़पते ही नैनों में रैन सारी ॥
कर जोड़कर पड़ें हम पैयां तुम्हारी राधे ।
विन्ती करें कहो तो विन्ती भी सौ सौ बारी ॥
किस कामकी है वंशी वह आप के बताओ ।
बेकार तुमने हमसे रक्खी है कर के न्यारी ॥
करते हैं 'गिरंद' राधेकी हरि खड़े खुशामद ।
करती हैं उनको राधे तिसपर भी तो दुखारी ॥

गज़ल ॥ ५६ ॥ राधेकी कृष्णजी से ।

किस अर्थ की हमारे है बाँसुरी तुम्हारी ।
चोरी हमें लगाते हो जिसकी तुम मुरारी ॥
आंखों से हमने देखी कानों से ना सुनी है ।
वशी तुम्हारी हमपे नहिं है विपिनविहारी ॥
झूठे ये झगड़ जाकर उसको अजी लगैयो ।
रय्यत हो या हो चेरी महाराज जो तुम्हारी ॥
जाओ न द्वार पर अब अइयो कभी हमारे ।
आये तो जाओगे तुम होकर बहुत दुखारी ॥
देखा न 'गिरंद' ऐसा जैसा लबार ये है ।
बेकार करता फिरता ये है नदी हमारी ॥

गज़ल ॥ ५० ॥ गोपियोंकी यशोदा से ।

कन्हैया गैलमें हमको पकड़ करता दुखारी है ।
यशोदा तुमसे ये फ़रियाद एक इतनी हमारी है ॥
श्रीनटकी दही खाताहै और सबको खिलाता है ।
जो हम कहती हैं कुछ उस से तो देता हमको गारीहै॥
मनाकर या उसे या ठौर रहने की बता हमको ।
पड़ो वो भाड़में बासियत जहां निशिदिनकी ख्वारीहै॥
इधर दधि बेचना छूटा उधर ब्रजकी छुटी बासियत ।
करें कैसी कहां जावें बड़ी मुश्किल हमारी है ॥
खड़ा रहता है जब देखो जभी वो गैलमें मैया ।
पकड़ता है जिसे उसको ही वो करता दुखारी है ॥
लगा छाती हमें देखो वो फिर कहता है ये हमसे ।
वार है जानोतन तुमपर नहीं तुम बिन क़रारी है ॥
कभी डाले है गलबैयां कभी पड़ता है वो पैयाँ ।
कभी वो 'गिरंद' कहता है कि तनमन तुमपै वारी है ॥

गज़ल ॥ ५१ ॥ यशोदा की गोपियों से ।

देख वह पालने में झूलता मेरा मुरारी है ।
कि जिसको झाड़ तू झूँठा लगाती ब्रजनारी है ॥
लाल मेरा साथ गौओंके वो जाता है सवेरे से ।
शाम होती है तो आता मेरा बांका बिहारी है ॥
फिरो हो मस्तमदमाती बावरी तुमतो जोबन में ।
गया ढल आँखका पानीभी ग्वालिनियाँ तुम्हारी है ॥

जोश ज्वानीका कुछ तुमको और जोबनकाभी कुछ है।
युँही तो लाज कुलकी तुमने ये अपने बिसारी है ॥
चलो जाओ मत आइयो द्वारपर अब भूलकर मेरे।
'गिरद' जो है उरहना देती आती ब्रजनारी है ॥

गज़ल ॥ ५२ ॥ गोपियोंकी ऊधोसे।

हमारी दरबदर हमको लिये तक़दीर फिरती है।
हैं बेबस इससे हम हमको किये दिलगीर फिरती है ॥
अगर किस्मत पलट जाये या फिर जाये तो क्या ग़महै।
मगर ये ग़महै के हमसे ये बेतक़सीर फिरती है ॥
इधर लौ कृष्णदर्शनकी उधर की कालने जल्दी।
मगर अफ़सोस ब्रह्माकी नहीं तहरीर फिरती है ॥
ढूँढता हूं उसे मैं वो नहीं मिलता मुझे यारो।
कि जिसकी सामने आँखोंके एक तसवीर फिरती है ॥
'गिरदा' यादे ईश्वरसे न हो ग़ाफ़िल न हो ग़ाफ़िल।
क़ज़ा तेरे लिये तेरी लिये शमशीर फिरती है ॥

ग़ज़ल ॥ ५३ ॥ गोपियोंकी ऊधोसे।

हमें घनश्यामसे ऊधो मिलादोगे तो क्या होगा।
लगी विरहा अगन तन है बुझादोगे तो क्या होगा॥
तड़पते रैनदिन हमको गुज़र जाता है बस उनबिन।
बुलाकर उनको तुम हम तक मिलादोगे तो क्या होगा॥
कहैं करजोर हम तुमसे पड़ैं पैयाँ तुम्हारी हम।
हमारा काम ये इतना बनादोगे तो क्या होगा ॥
रातको सोते २ चौंक पड़ती हैं हम ऐ ऊधो।